वर्ष 25 | अंक 6 | जनवरी, 2024
ISSN No. 2582-4546
₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

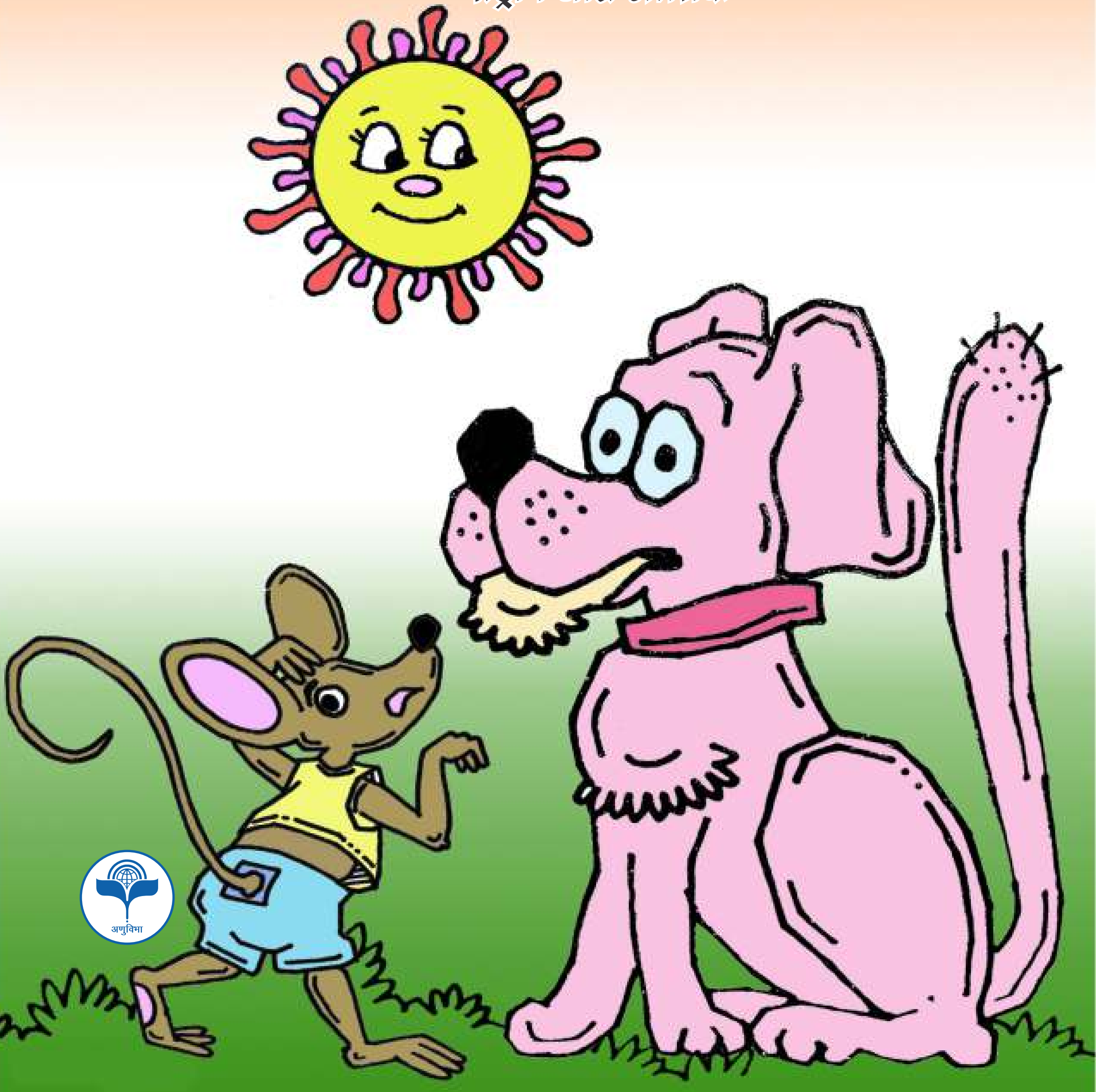

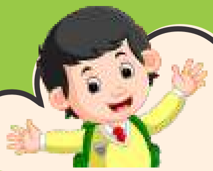

क्या आप जानते हो ?

पारम्परिक दृष्टि से नये वर्ष की शुरूआत भारत के अलग-अलग भागों में, अलग-अलग दिन और अलग-अलग पर्व के रूप में होती है। लोग परम्परागत तरीके से खुशी मनाते हैं और अच्छे भविष्य की कामना करते हैं। हिन्दू नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। महाराष्ट्र में गुड़ीपड़वा, दक्षिण भारत में उगादि, कश्मीर में नवरेह, केरल में विषु, पंजाब, हरियाणा व जम्मू में वैशाखी, असम में बिहू आदि नववर्ष के ही पर्व-त्योहार हैं। नये वर्ष की शुरूआत के रूप में अब 1 जनवरी को विश्व के अधिकांश भागों में मनाया जाता है इसलिए भारत में भी इस दिन उत्साह का माहौल रहता है।

नववर्ष मनाने के कुछ अजीबोगरीब तरीके

इक्वाडोर में नये वर्ष की अर्द्धरात्रि को बिजूका को जलाने की परम्परा है। उनका यह विश्वास है कि इससे दुःखों से छूटकारा मिलता है।

स्पेन में नव वर्ष पर रात के जब 12 बजते हैं, तब घड़ी के हर घंटे के साथ वहाँ के लोग एक अंगूर खाते हैं। इस तरह 12 अंगूर शुभ भविष्य का प्रतीक माने जाते हैं।

फिलिपींस में नये वर्ष के दिन लोग गोल वस्तुएँ खरीदते हैं। इन्हें सिक्के अर्थात् धन व समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

जापान में नये वर्ष की रात्रि में 12 बजने पर 12 घंटों की बजाय 108 घंटे बजाये जाते हैं। उनका मानना है कि इससे जीवन में नकारात्मक भाव समाप्त हो जाते हैं।

दुनिया में ऐसे अनेक तरीके अच्छे भविष्य की आशा में अपनाए जाते हैं लेकिन आज के आधुनिक और वैज्ञानिक युग में इन्हें अंधविश्वास ही कहा जाएगा।

प्यारे बच्चो,
'बच्चों का देश' का यह रजत जयंती वर्ष है
इस पत्रिका को पढ़ने से आपको कई लाभ होते हैं, जैसे-
किताबें पढ़ने की आदत बनती है,
जीवन के बारे में सही सोच का विकास होता है एवं
स्वयं कुछ लिखने की रुचि बनती है।
इसलिये जब भी 'बच्चों का देश' पढ़ो, पूरा मन लगाकर पढ़ो।

इस माह का विचार यहाँ दिया जा रहा है-

इसे आपको गहराई के साथ समझना है,
और दूसरों के साथ इस पर चर्चा भी करनी है।

बीते कल से सीखो,
आज के लिए जियो और
आने वाले कल से आशा रखो

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 6 जनवरी, 2024

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : सुशील कुमार, दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : अविनाश नाहर
महामन्त्री : भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
प्रकाशन मन्त्री : देवेन्द्र डागलिया
पत्रिका प्रसार संयोजक : सुरेन्द्र नाहटा

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

स्तम्भ

06 सम्पादक की पाती
07 महाप्रज्ञ की कथाएँ
13 सुडोकू
16, 21 आओ पढ़ें : नई किताबें
29 दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो
30 अन्तर ढूँढ़िये
33 व्हाट्सएप कहानी
41 पढ़ो और जीतो, उत्तरमाला
42 कलम और कूँची
44 नन्हा अखबार
46 Science of Living : Jeevan Vigyan
49 किड्स कॉर्नर, जन्मदिन की बधाई

नया आकर्षण
पढ़ो और जीतो
देखें पृष्ठ 41 पर

कविता

08 **बिलोटे ने खायी खीर**
श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

10 **मेरे देश की शान**
राजेन्द्र कुमार सिंह

10 **होगा नया कमाल**
गिरीश पंकज

18 **अच्छे मित्र**
सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'

18 **मुझे बड़ा होना है**
रोचिका अरुण शर्मा

30 **ठंड की शैतानी**
किशोर श्रीवास्तव

कहानी

09 **लाल निक्कर का कमाल**
रजनीकान्त शुक्ल

15 **चूहे का दामाद**
दिविक रमेश

19 **नतीजा नहीं, कोशिश है...**
कुसुम अग्रवाल

23 **मैं पराया नहीं**
रंजना मिश्रा

31 **मोरू बन गया मोर**
राजीव तांबे, डॉ. विशाखा ठाकूर

35 **ये हैं मेरी अच्छी दोस्त**
यशपाल शर्मा 'यशस्वी'

39 **रोली और छवि**
मुग्धा पांडे

आलेख

08 **राज्य पक्षी–8 : हंसावर**
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी

11 **सावित्री बाई फुले**
समीर गांगुली

26 **आओ जानें हमारा लोकतन्त्र**
संचय जैन

28 **शरारती होते हैं बन्दर**
किरण बाला

34 **मेरा देश : गाँव विशेष–13**
शिखर चन्द जैन

38 **विश्व विरासत स्थल–4**
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

47 **हम नव वर्ष 1 जनवरी को...**
लक्ष्मी कानोड़िया

विविधा

14 **विस्मयकारी भारत–13**
रवि लायटू

12 **चित्र पहेली**
चाँद मोहम्मद घोसी

17 **वर्ग पहेली**
राधा पालीवाल

22 **अणुव्रत की बात**
मनोज त्रिवेदी

25 **दिमागी कसरत**
प्रकाश तातेड़

34 **कितने आयत, कितने...**
राकेश शर्मा राजदीप

37 **बूझो तो जानें**
प्रवीन कुमार

48 **चित्रकथा**
संकेत गोस्वामी

आवरण चित्रांकन
राकेश शर्मा राजदीप

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

रवीन्द्र और रिजवान दोनों अच्छे मित्र हैं, दोनों एक ही स्कूल और एक ही क्लास में पढ़ते हैं। दोनों के घर भी बस पाँच मिनट की पैदल दूरी पर हैं। रिजवान और रवीन्द्र की क्लास में इस वर्ष एक नया बच्चा पढ़ने आया है– एरोन। एरोन रवीन्द्र और रिजवान की दोस्ती से बहुत प्रभावित है।

क्रिसमस से दो दिन पहले एरोन ने रवीन्द्र और रिजवान को अपने घर आमन्त्रित करते हुए कहा– ''क्या तुम दोनों क्रिसमस पर मेरे घर आओगे? हम साथ–साथ चर्च भी चलेंगे।'' रिजवान और रवीन्द्र ने खुशी–खुशी एरोन का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। क्रिसमस का पूरा दिन तीनों ने साथ–साथ बिताया। चर्च गये और सांता क्लॉज ने उन्हें उपहार भी दिये।

अब तीनों अच्छे दोस्त बन गये। तीनों ने मिलकर यह तय किया कि नये वर्ष के दिन वे रवीन्द्र के घर मिलेंगे और दादाजी का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। रवीन्द्र के दादाजी एक शिक्षक हैं। वे बच्चों को दोस्ताना शैली में पढ़ाते हैं और इसी के चलते शहर में उनका खूब नाम है।

नव वर्ष के दिन तीनों मित्रों ने दादाजी के साथ काफी समय बिताया। दादाजी ने उन्हें नये वर्ष में सफलता प्राप्त करने के कई टिप्स भी दिये। वे दादाजी से बात कर ही रहे थे कि तभी एरोन का ध्यान बार–बार हॉल में चल रहे टीवी पर जा रहा था। रवीन्द्र के पिताजी टीवी देख रहे थे जिसमें धर्म से जुड़े किसी मुद्दे को लेकर गर्मागर्म बहस हो रही थी। एंकर के प्रश्नों के जवाब में उस शो में शामिल हिन्दू सन्त, मुस्लिम मौलवी और ईसाई पादरी एक–दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे थे। एरोन को यह सब बहुत अटपटा लग रहा था। उसने दादाजी से पूछा–''दादाजी, ये धार्मिक लोग भी इतने झगड़ते क्यों हैं?''

एरोन का प्रश्न सुनकर दादाजी गम्भीर हो गये। वे चिन्तित भी थे कि ऐसे कार्यक्रमों से बच्चों पर कितना गलत प्रभाव पड़ रहा है। वे बोले– ''बेटा, सभी धर्म हमें एक दूसरे का सम्मान करना सिखाते हैं। सच्चा धार्मिक व्यक्ति कभी भी दूसरे धर्म को नीचा नहीं दिखाता। कोई ऐसा करता है तो मैं उसे धार्मिक नहीं मानता।''

रवीन्द्र के मन में भी कुछ दिनों से जो प्रश्न घूम रहा था, उसने पूछ ही लिया – ''दादाजी, एरोन ईसाई है, रिजवान मुसलमान और मैं हिन्दू। क्या हमारी दोस्ती गलत है?''

दादाजी ने रवीन्द्र के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– ''तुम तीनों को दोस्त के रूप में देखकर मुझे गर्व होता है। तुम तीनों को यह दोस्ती जीवन भर निभानी है, यही मेरा आशीर्वाद है। मेरे लिए सच्चे धार्मिक होने का यही सबसे बड़ा उदाहरण है।''

बच्चो! दादाजी की इस सीख को हमें भी गाँठ बाँधकर साथ रखना है। दूसरों की बातों से हमें प्रभावित नहीं होना है और सभी धर्म के लोगों का सम्मान करना है। नये वर्ष की हार्दिक शुभकामना।

आपका ही,

संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

प्रतिबिम्ब का मूल्य

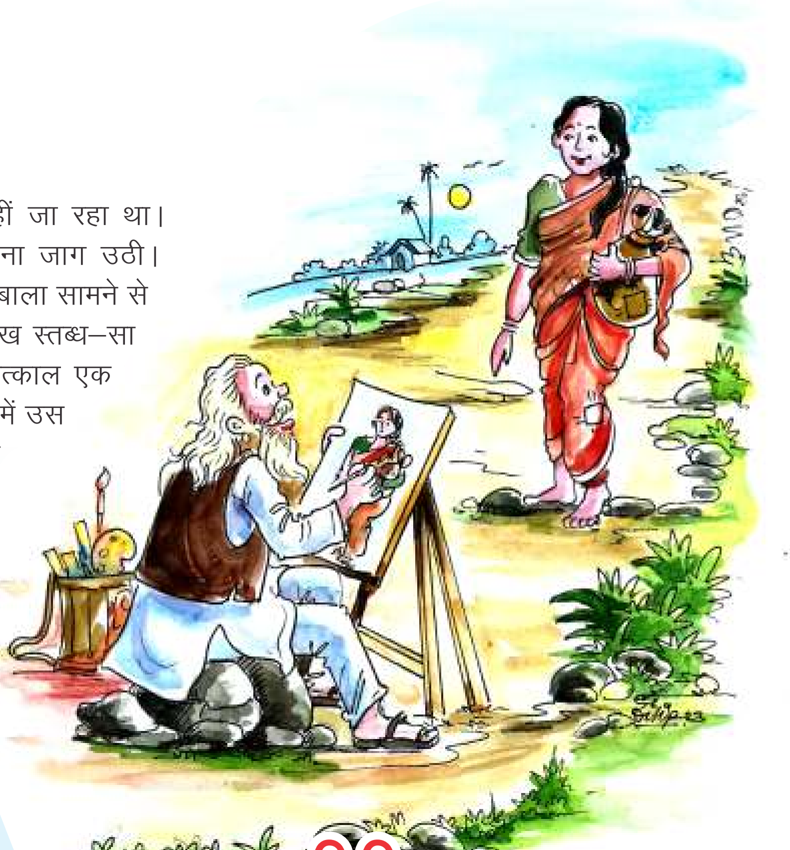

एक कुशल चित्रकार कहीं जा रहा था। उसके मन में चित्र बनाने की कल्पना जाग उठी। इतने में देखा कि एक सुन्दर ग्रामीण बाला सामने से आ रही है। वह उसके सौंदर्य को देख स्तब्ध–सा रह गया। उसने बाला को रोका। तत्काल एक चित्र बना डाला। एक चित्र–प्रदर्शनी में उस सुन्दर चित्र को रखा। देखने वालों ने उस चित्र की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

एक भिखारिन अपने पति के साथ उस चित्र–प्रदर्शनी के पास आयी। अपना चित्र देख वह ठिठक गयी। लोग उस चित्र को लेने के लिए उतावले हो रहे थे। एक व्यक्ति ने उसे दस हजार रुपये में खरीद लिया। वह चित्र लेकर बाहर निकला। भिखारिन ने दो पैसे माँगे। उसने उसको दुत्कार दिया।

भिखारिन चिल्लायी– "अरे भैया! जिस चित्र को तुमने दस हजार रुपये में खरीदा है, वह मेरा अपना चित्र है। मेरे चित्र के दस हजार और मुझे दो पैसे भी नहीं! कैसी विडम्बना है?"

कथाबोध : यह संसार भ्रम में जीता है। मूल को महत्त्व नहीं देता और छाया या प्रतिबिम्ब को मूल्यवान मान बैठता है।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	: 350 रु.
त्रैवार्षिक	: 900 रु.
पंचवार्षिक	: 1500 रु.
दस वर्ष	: 3000 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7500 रु.

विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

बच्चों का देश

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन

ANUVRAT VISHVA BHARTI SOCIETY
IDBI Bank BRANCH Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC : IBKL0000104

UPI

RAZOR PAY
https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634515

गुजरात का राज्य पक्षी

हंसावर

समूह में रहनेवाला यह एक बड़ा जलीय पक्षी है। यह ताजा और खारे पानी की झीलों और नदियों के किनारों पर रहना पसन्द करता है। इसका प्रमुख भोजन केकड़े, घोंघे, झींगे तथा छोटी–छोटी मछलियाँ हैं। ये अपनी लम्बी चोंच को पानी अथवा कीचड़ में डालकर भोजन प्राप्त करता है। यह रोचक तरीके से भोजन करता है। इसकी विशेष प्रकार की चोंच उथले पानी से खाने योग्य पदार्थों को छानकर अलग कर लेती है और शरीर के भीतर पहुँचा देती है।

यह सामाजिक पक्षी है जो नदी व तालाब के निकट रहता है। यह जल के किनारे जमीन पर घोंसला बनाता है जो 15–25 सेन्टीमीटर तक ऊँचा होता है। इसका स्तूपनुमा घोंसला कीचड़ और मिट्टी आदि से बनाया जाता है।

डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
जयपुर (राजस्थान)

बिलौटे ने खायी खीर

चावल, दूध और चीनी ले,
मेवा खूब मिलाई।
फिर मिट्टी के चूल्हे में थी,
माँ ने खीर चढ़ाई।

गाढ़ा दूध मलाई वाला,
घंटों उसे पकाया।
देख रहा था कहीं दूर से,
एक बिलौटा आया।

किसी काम से माँ चौके से,
जैसे बाहर आई।
उधर खीर को देख बिलौटे,
की नीयत ललचाई।

लप-लप लप-लप फिर होंठों पर,
उसने जीभ फिराई।
मीठी-मीठी खीर उड़ाने,
की फिर उक्ति लगाई।

माँ भी हैं चौके से बाहर,
बिलकुल सूना चौका।
सोच रहा था इससे अच्छा,
कहाँ मिलेगा मौका।

उधर खीर पक गई, तभी था,
माँ ने मुझे पुकारा।
आ जा खा जा खीर लाडले,
तू आँखों का तारा।

इधर बिलौटे ने जब अपनी,
दृष्टि खीर पर डाली।
क्या कहने थे उसके, गाढ़ी,
खीर मलाई वाली।

गरमागरम खीर पर उसने,
जीभ लगा दी भैया।
करने लगा उछल कर कत्थक,
वह तो ता ता थैया।

आड़ा भागा, तिरछा भागा,
भागा ऊपर नीचे।
उल्टा भागा, सीधा भागा,
अपनी आँखें मीचे।

माँ ने जब यह देखा तो वह,
बोली मूर्ख बिलौटे।
ठंडी होने पर मैं देती,
तुझे, अक्ल के मोटे।

ठहर इसे ठंडी होने पर,
तू ही पूरी खाना।
मुझे दुबारा आज पड़ेगी,
अब तो खीर बनाना।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
कालपी जालौन (उत्तर प्रदेश)

लाल निक्कर का कमाल

जिला मुख्यालय से मात्र सात किलोमीटर दूर परवा गाँव महाराष्ट्र राज्य के परभणी जिले के अन्तर्गत आता था। नितिन, राजू और दयानेवर तीनों अपने–अपने घरों के मवेशियों को लेकर चराने जाते। वहीं गाँव के पास से होकर रेलवे लाइन गुजरती थी। इसके पास जाकर निश्चिन्त होकर इन तीनों ने अपने मवेशी छोड़ दिए और रेलवे ट्रैक के पास बैठकर मवेशियों पर निगरानी रखने लगे। उन तीनों की उम्र पन्द्रह वर्ष के आस–पास थी।

काफी देर बैठे–बैठे वे जब उकता गए तो उनमें से एक नितिन उठकर खड़ा हो गया। उठकर वह रेलवे ट्रैक पर यूँ ही आगे बढ़ा तो सामने का दृश्य देखकर हैरत में पड़ गया। उसने देखा कि आगे लाइन पर दोनों ओर पड़े रहने वाले पत्थर एक जगह पर काफी ऊपर की ओर उठे हुए थे। वह दौड़ता हुआ उस जगह के करीब पहुँचा तो उसका मुँह खुला का खुला रह गया क्योंकि वहाँ पर रेलवे की पटरी का जोड़ टूटा हुआ था। उसने तेजी से आवाज देकर अपने दोनों साथियों को बुलाया।

अभी वे दोनों उसकी बात सुनकर वहाँ तक आ ही पाए थे कि तभी उन्हें उसी लाइन पर नांदेड नागरसोल पैसेन्जर ट्रेन सामने से आती हुई दिखाई दी। उन्हें लगा कि टूटे ट्रैक पर इस तरह से ट्रेन गुजरना खतरनाक हो सकता है इसलिए इसे हमें रोकना होगा। उन्होंने जोर से आवाज लगाई और अपनी तरह से उस ट्रेन को रोकने की भरपूर कोशिश की। परन्तु वह ट्रेन नहीं रुकी और वह धड़–धड़ करती हुई, उस ट्रैक से गुजर गई। जब तक वह ट्रेन उस ट्रैक के ऊपर से गुजरती रही। इन तीनों को लगा कि जरूर कोई न कोई दुर्घटना हो जाएगी। मगर बिना नुकसान के वह पैसेन्जर ट्रेन गुजर गई।

उस ट्रैक पर कुछ–कुछ देरी के बाद कई ट्रेनें गुजरती थीं। कुछ देर बाद इस ट्रैक से मुम्बई

देखें पृष्ठ 13...

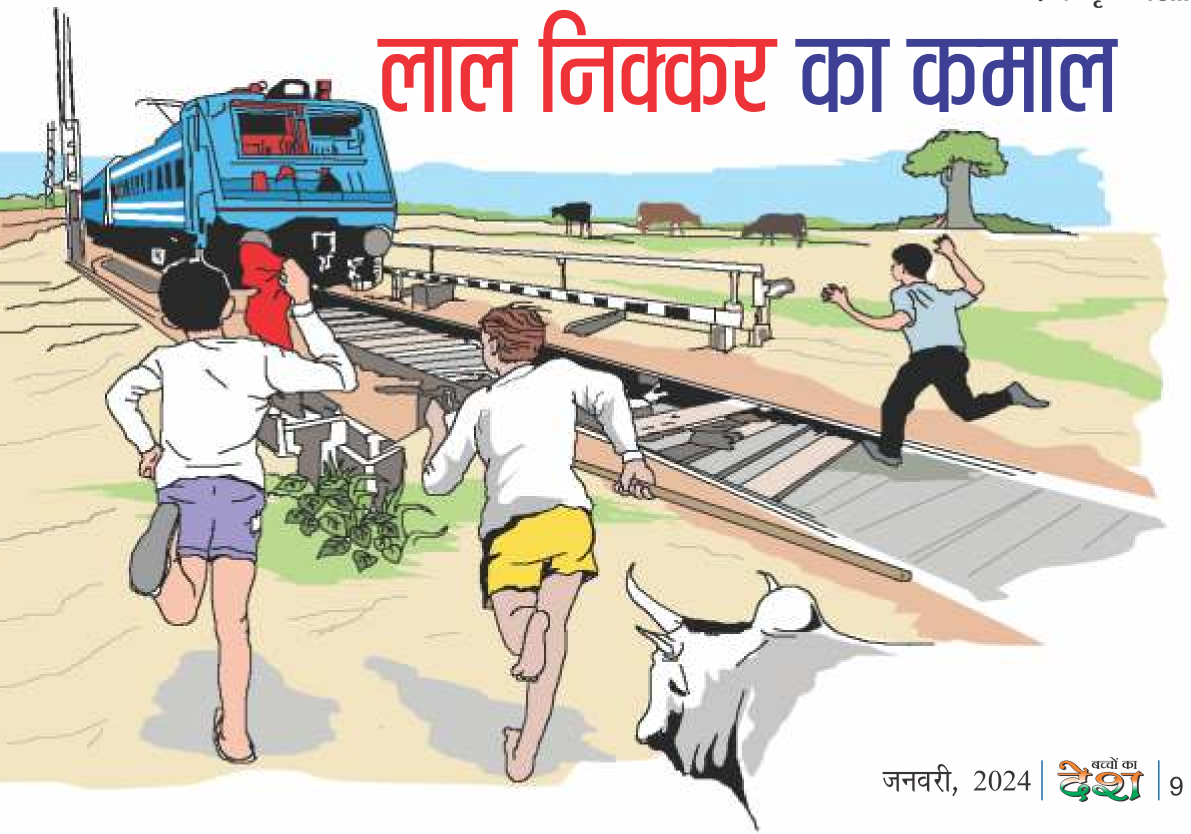

मेरे देश की शान

रहते हैं मुट्ठी जैसा बंध के, ऐसा मिला संस्कार।
मातृभूमि है सर्वोत्तम, हम करते इससे प्यार।।
कौम हमारी भले अलग हो, पहले हम इनसान हैं।।
ये तिरंगा, ये तिरंगा... मेरे देश की शान है।।

इरादे हैं बुलन्द हमारे, है अलग–अलग परिवेश।
सारे जहाँ से अच्छा, है ऐसा अपना देश ।।
कहीं बजता घंटा, तो होती कहीं अजान है।
ये तिरंगा, ये तिरंगा... मेरे देश की शान है।।

राजेन्द्र कुमार सिंह
नासिक (महाराष्ट्र)

होगा नया कमाल

नया वर्ष जब आया है तो,
होगा नया कमाल।
नई सोच के साथ करेंगे,
जीवन हम खुशहाल।

कमी रह गई थी जो पिछली,
उसको दूर करेंगे।
मेहनत में कुछ कमी न होगी,
वह भरपूर करेंगे।
केवल बढ़ना लक्ष्य हमारा,
होगी नहीं धमाल।...

मोबाइल है बहुत जरूरी,
लेकिन नहीं खिलौना।
गेम, रील के चक्कर में अब,
वक्त नहीं है खोना।
पढ़–लिख कर आगे बढ़ना है,
रखना है यह खयाल।...

पढ़ना–लिखना और खेलना,
फिर करना आराम।
जल्दी सोना, जल्दी उठना,
यह तो अच्छा काम।
अच्छे नम्बर लाने होंगे,
फिर हमको इस साल।...

गिरीश पंकज
रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रथम शिक्षिका एवं समाज सुधारक

सावित्रीबाई फुले

जरा कल्पना करो, वह दौर और दृश्य कैसा होगा जब दीन–हीन वर्ग की एक बालिका ने युगक्रांति का सपना देखा होगा। समाज को शिक्षित करके शारीरिक–मानसिक गुलामी से स्वतन्त्रता दिलाने का संकल्प करने वाली सावित्रीबाई फुले का जन्म महाराष्ट्र के सातारा जिले के नयागाँव में एक दलित परिवार में 3 जनवरी 1831 को हुआ था। वह भारत की पहली महिला शिक्षिका थीं। उनके पिता का नाम खन्दोजी नैवेसे और माता का नाम लक्ष्मी था। सावित्रीबाई फुले शिक्षिका होने के साथ भारत के नारी मुक्ति आन्दोलन की पहली नेता, समाज सुधारक और मराठी कवयित्री भी थीं। इन्हें बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए समाज का कड़ा विरोध झेलना पड़ा था।

19वीं सदी में महिलाओं का स्कूल जाना भी पाप समझा जाता था। ऐसे समय में सावित्रीबाई फुले ने जो कर दिखाया वह कोई साधारण उपलब्धि नहीं थीं। वह जब स्कूल पढ़ने जाती थीं तो लोग उन पर पत्थर फेंकते थे। इस सबके बावजूद वह अपने लक्ष्य से कभी नहीं भटकीं और लड़कियों व महिलाओं को शिक्षा का हक दिलाया। उन्हें आधुनिक मराठी काव्य का अग्रदूत माना जाता है।

कैसे बनी शिक्षिका

सावित्रीबाई का विवाह सन 1940 में मात्र नौ साल की उम्र में ज्योतिराव फुले से हो गया। शादी के बाद वह अपने पति के साथ पुणे आ गईं। विवाह के समय वह पढ़ी–लिखी नहीं थीं। लेकिन पढ़ाई में उनकी रुचि और लगन से प्रभावित होकर उनके पति ने उन्हें पढ़ना–लिखना सिखाया। सावित्रीबाई ने अहमदनगर और पुणे में शिक्षक बनने का प्रशिक्षण लिया और भारत की पहली शिक्षिका बनीं।

पहले बालिका विद्यालय की स्थापना

सावित्रीबाई ने 3 जनवरी 1848 को पुणे में अपने पति के साथ मिलकर मात्र 9 छात्राओं के साथ महिलाओं के लिए पहले विद्यालय की स्थापना की। एक वर्ष में सावित्रीबाई और महात्मा फुले पाँच नये विद्यालय खोलने में सफल हुए। तत्कालीन सरकार ने इसके लिए इन्हें सम्मानित भी किया। हालाँकि उन्हें अपने ही लोगों का कड़ा विरोध भी झेलना पड़ा क्योंकि लड़कियों की शिक्षा पर उस समय सामाजिक पाबन्दी थी। सावित्रीबाई फुले उस दौर में न सिर्फ खुद पढ़ीं, बल्कि दूसरी लड़कियों के पढ़ने का भी बन्दोबस्त किया।

विरोधों ने उन्हें दी नई दिशाएँ

भारत में आजादी से पहले समाज में छुआ–छूत, सती प्रथा, बाल–विवाह और विधवा–तिरस्कार जैसी कुरीतियाँ व्याप्त थी। सावित्रीबाई फुले ने इन सबके विरुद्ध आवाज उठायी। दलित महिलाओं के उत्थान के लिए काम करने, छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाने के

कारण उन्हें एक बड़े वर्ग द्वारा विरोध भी झेलना पड़ा। सावित्रीबाई अपने थैले में एक साड़ी लेकर चलती थीं और स्कूल पहुँच कर गन्दी हुई साड़ी बदल लेती थीं।

विधवाओं की दुर्दशा भी सावित्रीबाई को बहुत दुःख पहुँचाती थीं। इसलिए 1854 में उन्होंने विधवाओं के लिए एक आश्रय–स्थान खोला। वर्षों के निरन्तर सुधार के बाद वे 1864 में इसे एक बड़े आश्रय–स्थान में बदलने में सफल रही। उनके इस आश्रय गृह में निराश्रित महिलाओं, विधवाओं और उन बाल बहुओं को जगह मिलने लगी, जिनको उनके परिवार वालों ने छोड़ दिया था। सावित्रीबाई उन सभी को पढ़ाती–लिखाती थीं।

उन्होंने इस संस्था में आश्रित एक विधवा के बेटे यशवंतराव को भी गोद लिया था। उस समय आम गाँवों में कुएँ पर पानी लेने के लिए दलितों का जाना मना था। यह बात उन्हें और उनके पति को बहुत परेशान करती थी। इसलिए उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर एक कुआँ खुदवाया, ताकि वह लोग भी आसानी से पानी ले सकें। उनके इस कदम का भी उस समय खूब विरोध भी हुआ।

अपने पति का किया अन्तिम संस्कार

सावित्रीबाई के पति ज्योतिराव का निधन 1890 में हो गया। उस समय उन्होंने परम्परा को पीछे छोड़ते हुए अपने पति का अन्तिम संस्कार किया और उनकी चिता को अग्नि दी। इसके करीब सात साल बाद जब 1897 में पूरे महाराष्ट्र में प्लेग की बीमारी फैली तो वे प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की मदद करने निकल पड़ीं, इस दौरान वे खुद प्लेग की शिकार हो गईं और 10 मार्च 1897 को उन्होंने अन्तिम साँस ली।

सम्मान

1983 में पुणे म्युनिसिपल कॉपोरेशन ने उनका स्मारक बनवाया। 1988 में डाक विभाग ने डाक टिकट जारी किया। 2015 में पुणे विश्वविद्यालय का नाम बदलकर सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय किया गया। 2017 में गूगल ने गूगल डूडल के जरिए उन्हें श्रद्धांजलि दी।

समीर गांगुली
मुंबई (महाराष्ट्र)

चित्र पहेली

रानी मधुमक्खी को सही रास्ते से फूल के पास पहुँचाओ।

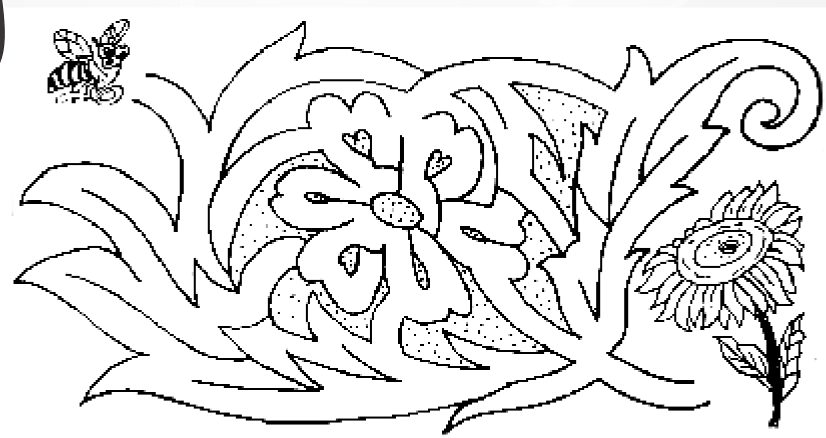

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

'लाल निक्कर का कमाल' पृष्ठ 9 का शेष....

नांदेड़ एक्सप्रेस गुजरने वाली थी। अगर वह ट्रेन तेज गति से इस टूटे ट्रैक से होकर गुजरेगी तो जरूर बहुत बड़ी दुर्घटना हो सकती है। उस दुर्घटना को अब उन्हें किसी भी सूरत में नहीं होने देना था। उन सबका दिमाग तेजी से चलने लगा था। वे अकसर वहाँ पर अपने मवेशी चराने आते थे इसलिए उन्हें ट्रेनों के आने का टाइम पता था।

वे जानते थे कि वह एक्सप्रेस ट्रेन कुछ ही देर में ट्रैक पर आने वाली थी। उसे कैसे रोका जाए? कहीं पिछली पैसेन्जर ट्रेन की तरह इस ट्रेन के ड्राइवर ने भी उनकी आवाज न सुनी तो? ''एक तरकीब है मेरे पास'' – उनमें से एक बोला। ''क्या है वह तरकीब, जरा जल्दी बोल।'' –दूसरे ने तेजी से पूछा। ''इतना तो हमें पता है कि ट्रेन हरी झंडी दिखाने पर चल पड़ती है और लाल झंडी दिखाने से रुक जाती है।'' –उसने कहा। ''हाँ, हाँ, यह तो पता है।'' –इतना कहते–कहते उसकी निगाह उसके पहने हुए निक्कर की ओर गई जो लाल रंग का था।

''बस बन गया काम, चलो चलते हैं।'' यह कहकर उन्होंने वह लाल निक्कर उतारा और अब वे तीनों पटरी के सहारे–सहारे चलने लगे जिस ओर से उस मुम्बई नांदेड तपोवन एक्सप्रेस ट्रेन को आना था। वे अभी कुछ ही दूर चले थे कि उन्हें ट्रेन की सीटी की आवाज सुनाई दी। दूर से बड़ी तेज गति से ट्रेन उसी ट्रैक पर बढ़ती चली आ रही थी। यह देखकर इन तीनों ने उसी दिशा में भागना शुरू कर दिया। ट्रैक के बीचोंबीच तीन लड़कों को अपनी ओर आते देख ट्रेन के ड्राइवर ने जोरदार सीटी बजाई। मगर वे तीनों सामने से हटने को राजी नहीं थे।

ट्रेन जब बिलकुल करीब आने को हुई तो इन्होंने जोरदार आवाज के साथ लाल निक्कर लहराया। इस संकेत को समझकर ड्राइवर ने ट्रेन में ब्रेक लगा दिया। रुकते–रुकते भी ट्रेन उस टूटे हिस्से से ठीक पहले तक पहुँच चुकी थी। ड्राइवर ने उतर कर देखा तो लाइन को क्षतिग्रस्त पाया। उनके द्वारा तुरन्त सम्बन्धित अधिकारियों को सूचना दी गई।

इन बच्चों की सूझबूझ और बहादुरी से एक बड़ी ट्रेन दुर्घटना होने से बच गई थी। नितिन उत्तम राव काकडे, दयानेवर मानिक राव काकडे, राजू नामदेव काकडे इन तीनों बच्चों के नाम वीरता पुरस्कार के लिए भेजे गये। भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली द्वारा उन्हें वर्ष 2003 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। इन बहादुर बच्चों को 2004 के गणतन्त्र दिवस पर प्रधानमन्त्री ने राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

सुडोकू

5	3			7				
6			1	9	5			
	9	8					6	
8				6				3
4			8		3			1
7				2				6
	6					2	8	
			4	1	9			5
				8			7	9

उत्तर इसी अंक में

विस्मयकारी भारत-13

कितना आश्चर्य होता है सुनकर कि भारत में 1 रुपये के सिक्के की उत्पादन लागत 1.11 रुपये आती है. 2 रुपये के सिक्के की लागत 1.28 रुपये, 5 रुपये के सिक्के की लागत 3.69 रुपये जबकि 10 रुपये के सिक्के की लागत केवल 5.54 रुपये ही आती है।

अपने 12 लाख कर्मचारियों की सहायता से 2.5 करोड़ यात्रियों को रोज़ उनकी मंज़िल तक पहुंचाने वाली **भारतीय रेल** विश्व का सबसे बड़ा नेट वर्क है।

ओडिशा का सबसे गर्म इलाका है टिटलागढ़ जिसमें कुम्हड़ा पहाड़ खासतौर पर ज्यादा ही गर्म रहता है क्योंकि यह पूरा इलाका पथरीली चट्टानों से भरा है जिनके गर्म होने पर ज़ाहिर है गर्मी का अहसास भी कुछ ज्यादा ही होने लगता है। इसी कुम्हड़ा पहाड़ पर स्थित है भगवान शिव-पार्वती का रहस्यमय प्राचीन मन्दिर जो इस आधुनिक युग में भी विज्ञान के लिए एक अनबूझ पहेली बना हुआ है। यह ऐसा मन्दिर है जिसके अंदर जाते ही गर्मी में भी सर्दी का अहसास होने लगता है और खास बात यह है कि जैसे-जैसे बाहरी टेम्प्रेचर बढ़ता जाता है, ठीक वैसे-वैसे ही मन्दिर के अंदर का टेम्प्रेचर कम होता जाता है। यहां आनेवाले श्रद्धालु सारे रास्ते भीषण गर्मी से हैरान-परेशान होते रहते हैं लेकिन जैसे ही ये मन्दिर के अंदर कदम रखते हैं फौरन ठंडक से ऐसी राहत पा जाते हैं मानों यहां कोई एसी चल रहा हो।

दुनिया के सातों अजूबे एक साथ कहीं देखने हों तो कोलकाता में न्यू टाउन का इको पार्क घूम लें जो 480 एकड़ भूखंड में फैला हुआ अपने देश का सबसे बड़ा पार्क है।

यह पार्क दुनिया के सभी सात आश्चर्यों का प्रतिनिधित्व करता है अर्थात मिस्र से गीज़ा के महान पिरामिड, जॉर्डन से पेट्रा, रोम से कोलोसियम, चीन से विशाल दीवार, ईस्टर द्वीप से मोई मूर्तियां, ब्राज़ील से क्राइस्ट द रिडीमर और भारत से ताजमहल।

यह पूरा सेटअप 3 एकड़ भूमि पर विस्तारित है।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

© gulahim@gmail.com/V 0 8077554501

चूहे का दामाद

एक था चूहे का परिवार। सब मिलजुल कर सुख से रहते थे। चूहे और चुहिया ने महसूस किया कि उनकी बेटी शादी के लायक हो गई है। बेटी बहुत सुन्दर थी। पिता ने माँ से कहा– "हमें अपनी बेटी के लिए संसार के सबसे शक्तिशाली वर की तलाश करनी चाहिए।'' माँ को पिता की बात पसन्द आई सो झट से मान ली। अपनी बेटी चुहिया को वह संसार की सबसे ज्यादा सुन्दरी मानती थी।

पिता और माँ ने लम्बी चर्चाएँ की। आखिर सबसे ज्यादा शक्तिशाली वर जो ढूँढ़ना था। आखिर उन्होंने निर्णय किया कि सूरज से ज्यादा कोई ताकतवर नहीं है। सो चल पड़े वे सूरज से मिलने आकाश में। मन ही मन बहुत खुश थे कि उनका दामाद सूरज होगा। संसार को जगमगाने वाले सूरज से ज्यादा और कौन ताकतवर हो सकता है? लम्बे–लम्बे तीन वर्ष बीत गए। तब जाकर वे सूरज के पास पहुँचे ।

उन्होंने सूरज से कहा– "सूरज बेटे! हमारी बेटी संसार में सबसे ज्यादा सुन्दर है। इसीलिए हमने उसका विवाह संसार के सबसे शक्तिशाली वर के साथ करने का निश्चय किया है और तुमसे ज्यादा ताकतवर भला और कौन है? सो हम अपनी बेटी का ब्याह तुम्हारे साथ चाहते हैं।

सूरज को यह सुनकर बहुत संकोच हुआ। उसने उन्हें निराश करते हुए विनम्र शब्दों में कहा– "आपने मेरे बारे में जो कहा वह सच नहीं है। संसार में मुझसे भी ज्यादा ताकतवर हैं। बादल को ही लो। जब चाहे वह मुझे ढक सकता है। मेरी रोशनी को धरती पर जाने से रोक सकता है। तो हुआ न बादल सबसे ज्यादा ताकतवर?"

"हाँ, सो तो है।" –कुछ सोचते हुए चूहा दम्पती ने कहा। असल में उन्हें सूरज की बात ठीक लगी। सो पहुँच गए बादल के पास। वहाँ भी उन्होंने अपनी बेटी को सबसे सुन्दर और बादल को सबसे ताकतवर बताते हुए बादल के सामने अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा– "हमारी बेटी के लिए तुमसे ज्यादा और कोई उचित वर नहीं हो सकता।''

सुनते ही बादल ने कहा– "नहीं, नहीं, संसार के सबसे ताकतवर के तो मैं आसपास भी नहीं हूँ। यह ठीक है कि बहुत मेहनत करके मैं सूरज को ढाप लेता हूँ पर आप सोचें कि पवन का

तो मैं कुछ नहीं बिगाड़ सकता न? वह मुझे कहीं भी बहाकर ले जाने में समर्थ है। सचमुच पवन मुझसे कहीं ज्यादा ताकतवर है।''

चूहा–चुहिया अब क्या करते? बेटी के लिए सबसे शक्तिशाली वर तो खोजना ही था सो निकल पड़े वे पवन की तलाश में। थोड़ा आगे पहुँचे तो चुहिया ने पति से कहा– "अजी आओ, यही धूप में तनिक सुस्ता ही लें।'' चूहे को पत्नी का विचार अच्छा लगा। सो झट से कहा– "हाँ, हाँ, क्यों नहीं। थोड़ा आराम कर ही लेते हैं। यह योग्य वर खोजना भी कितना मुश्किल काम है।''

दोनों कोने में धूप सेंकते सुस्ताने लगे तभी वहाँ से पवन गुजरा। पवन को देखते उन्होंने कहा– "पवन जी! पवन जी! जरा सुनिए तो। हम अपनी बेटी के लिए सबसे शक्तिशाली वर ढूँढ़ रहे हैं। हमने बादल से सुना है कि तुम सबसे शक्तिशाली हो। हम भी ऐसा ही मानते हैं। कृपया हमारे दामाद बन जाओ।''

चूहे–चुहिया की बात पर पवन अपनी हँसी न रोक सका। उसे बहुत जोर से हँसी आ गई। हँसते–हँसते ही उसने कहा– "आँ आँ, संसार का सबसे ताकतवर में नहीं बल्कि पत्थर से बनी बुद्ध की मूर्ति है। वह छुंगछोंग राज्य के इयुन जिन में है। मैं भले ही बादल को दूर ले जा सकता हूँ लेकिन बुद्ध की मूर्ति को तो एक इंच भी नहीं खिसका सकता।''

पवन की बात सुनकर वे धरती पर लौट आए, क्योंकि आकाश में तो उन्हें कोई योग्य वर मिला नहीं। धरती पर पहुँचते ही वे बुद्ध की मूर्ति के पास गए और बोले– "हम जान गए हैं कि आप ही हमारी बेटी के लिए सबसे उचित वर हो। आप संसार में सबसे ताकतवर हो। पवन ने हमें ऐसा ही बताया है।''

उनकी बात सुनकर बुद्ध ने शान्त स्वरों में कहा– "यह ठीक है कि मैं पवन का मुकाबला कर सकता हूँ लेकिन एक है जो मुझसे भी ज्यादा ताकत रखता है।' "सच!" चूहे चुहिया ने एक साथ कहा। ''हाँ!'' – बुद्ध की मूर्ति ने विश्वास के साथ कहा। "कौन है वह? कृपया जल्दी बताइये।" चूहे–चुहिया ने पूछा। "वह है एक कुंवारा चूहा जो मेरे पाँवों के नीचे बिल बनाकर रहता है। मुझे तो हर वक्त यही फिक्र रहती है कि जिस दिन खोद–खोद कर उसने अपना बिल बड़ा कर लिया तो उस दिन मेरा क्या होगा? मैं तो गिर ही जाऊँगा न?'" बुद्ध ने उत्तर दिया।

चूहा–चुहिया बुद्ध की बात से खुश हुए। उन्होंने कुंवारे चूहे को ढूँढ़ कर अपनी बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया। साथ ही खुश होकर यह भी कहा– "हमें तो मालूम ही न था कि हम चूहे ही दुनिया में सबसे ज्यादा ताकतवर हैं।''

दिविक रमेश
नोएड़ा (उत्तर प्रदेश)
(कोरियाई लोक कथा पर आधारित)

आओ पढ़ें : नई किताबें

शीर्षक के अनुरूप देशभक्ति युक्त 44 बाल कविताओं का यह संकलन बालमन को लुभाने वाला है। ये सभी कविताएँ राष्ट्रीयता से सम्बन्धित हैं जो बाल मन में देशप्रेम जगाती हैं। इसमें 22 प्रसिद्ध बाल साहित्यकारों की रचनाएँ संगृहीत की गई हैं जो लयात्मक एवं गेय हैं। निःसंदेह यह पुस्तक बालकों के लिए उपयोगी है।

पुस्तक का नाम : : जग से न्यारा देश हमारा **सम्पादक :** प्रकाश तातेड़
मूल्य : 125 रुपये **पृष्ठ :** 48 **संस्करण :** 2023
प्रकाशक : सुभद्रा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली

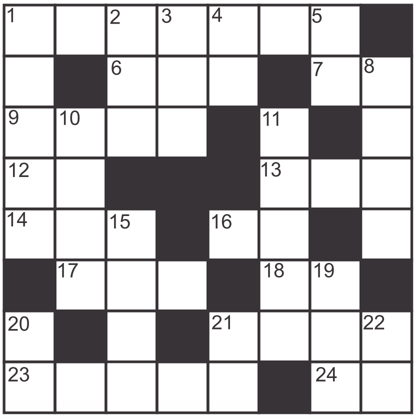

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. गणतन्त्र दिवस मनाने की दिनांक (7)
6. लाड़–प्यार करना (3)
7. मुकुट, एक महल का अगला शब्द (2)
9. डरना, भयभीत होना (4)
12. कंठ, गरदन (2)
13. फूलों की माला, वेणी़ (3)
14. गिरना (3)
16. तीर्थ (2)
17. झुकाव, कमजोर(3)
18. गीत, तराना (2)
21. रिक्तता,निर्जनता (4)
23. इनके सम्मान में 12 जनवरी को युवा दिवस मनाया जाता है। (5)
24. सर्प, साँप (2)

ऊपर से नीचे

1. मध्यप्रदेश से बना नया राज्य (5)
2. नमस्कार, वन्दन, झुकना (3)
3. दहन, आग से सम्बन्धित क्रिया (3)
4. ईसाई सेविका (2)
5. खाली, रिक्त़ (2)
8. पेट की आग (4)
10. जहर, विष (4)
11. चमकना, झिलमिलाना (5)
15. अच्छे साज बजाने पर मन होता है (4)
19. मापना (3)
20. कविता लिखने वाला (2)
21. ब्याज, बचत पर मिलने वाली राशि (2)
22. पहाड़, पर्वत, रत्न (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

मालिन आवत देख के, कलियन करे पुकार।
फूले–फूले चुन लिए, कालि हमारी बार।

माली को आते देखकर बगीचे की कलियाँ आपस में बातें करती हैं कि आज माली ने खिले हुए फूलों को तोड़ लिया और कल हमारी बारी आ जाएगी। भावार्थ यह है कि आज आप जवान हैं, कल आप भी बूढ़े हो जायेंगे और एक दिन मिट्टी में मिल जाओगे। आज की कली, कल फूल बनेगी। इसमें शरीर की नश्वरता का संदेश दिया गया है।

अच्छे मित्र

सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'
कोटा (राजस्थान)

जीवन में आवश्यक होता
रखना अच्छे मित्र,
तन–मन को महकाने वाले
होते हैं ये इत्र।

कदम–कदम पर ये देते हैं
बन परछाई साथ,
पार कठिन राहें हो जाती
पकड़े इनका हाथ।

अच्छे मित्रों से मिलती है
हमको अच्छी सीख,
अपने अन्दर की कमियाँ भी
इनसे जाती दीख।

अच्छे मित्र दूर कर देते
हमसे सभी तनाव,
लगा किनारे ये देते हैं
फँसी भँवर में नाव।

अच्छे मित्र सदा रहते हैं
अपने मन के पास,
नहीं अकेलेपन का होता
जिससे है आभास।

जीवन में जब–जब भी आते
कठिन समय के मोड़,
अच्छे मित्र साथ देते हैं
कभी न जाते छोड़।

जिनके पास मित्र हैं अच्छे
वे सच्चे धनवान,
करता है विश्वास इन्हीं का
जीवन को आसान।

छाँव हमें दे सुख की शीतल
हरते दुःख की धूप,
अच्छे मित्र फरिश्तों के ही
होते जग में रूप।

मुझे बड़ा होना है

पापा जैसे काले जूते, मम्मी मुझको ले दो ना,
मुझे बड़ा होना है जल्दी, और अकेले है सोना।

अपनी मर्जी से मैं बाहर, जब चाहे जितना खेलूँ ,
जी में आये ठंडा पी लूँ, स्वयं खरीद खिलौने लूँ।
क्यों मुझको है बात माननी, मेरे मन की भी तो हो,
अच्छा बच्चा कहकर मुझको, बहला, फुसलाते क्यों हो।

जैसे पापा करें फैसले, निर्णय का हक मुझको दो,
सोच–समझ मैं भी सकता हूँ, अब से मत रोको–टोको।
काले जूते ऑफिस वाले, टक–टक करता जाऊँगा,
स्वयं ही चलाऊँगा गाड़ी, खूब कमा कर लाऊँगा।

रोचिका अरुण शर्मा
चेन्नई (तमिलनाडु)

नतीजा नहीं, कोशिश है महत्त्वपूर्ण

पात्र : कक्षा के विद्यार्थी अंशुल, विजय, दीप्ति, कुणाल, अध्यापिका एवं प्रिन्सिपल

स्थान : एक कक्षा का है जहाँ बच्चे बेसब्री से अपना परीक्षाफल सुनाए जाने का इन्तजार कर रहे हैं।

अंशुल : इस बार मेरे पेपर बहुत अच्छे हुए हैं। मैंने बहुत मेहनत की थी इसलिए मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरा रिजल्ट अच्छा रहेगा।

विजय : मेरा भी। मैंने भी इस बार परीक्षा में बहुत मेहनत की थी। पूरे सिलेबस को दो बार दोहराया था। साथ ही कठिन प्रश्नों को कई बार हल किया था। इसलिए नतीजा तो मेरा भी अव्वल ही रहना चाहिए।

दीप्ति : शायद मेरा रिजल्ट इस बार अच्छा नहीं रहेगा क्योंकि मैंने ज्यादा मेहनत नहीं की थी। उस पर परीक्षा के दिनों में मेरी तबीयत भी खराब हो गई थी।

कुणाल : मैंने मेहनत की थी परन्तु फिर भी इतनी भी नहीं कि रिजल्ट बहुत अच्छा रहे। पहले से बेहतर आने की उम्मीद है।

(कक्षा में अध्यापिका का प्रवेश।)

अध्यापिका : सुप्रभात बच्चो! देखो मेरे हाथ में क्या है? ये हैं तुम्हारे रिपोर्ट काड्‌र्स। आज मैं तुम्हें तुम्हारा परीक्षाफल देने वाली हूँ। क्या तुम अपने परीक्षाफल का इन्तजार कर रहे हो?"

सभी बच्चे : (एक साथ) हाँ मैडम, हम अपने परीक्षाफल का कई दिनों से इन्तजार कर रहे हैं। हमारे मन में बहुत घबराहट भी हो रही है।

अध्यापिका : इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। परीक्षाफल है कोई तूफान नहीं।

(यह कह कर सबको रिपोर्ट कार्ड वितरित करती है। सभी बच्चे अपने

रिपोर्ट कार्ड को बड़े ध्यान से देखते हैं तथा सबके चेहरे पर अलग–अलग भाव उभरते हैं।)

अंशुल : (रिपोर्ट कार्ड देखकर खुशी से लगभग चीखता हुआ) हुर्रे! मजा आ गया। मुझे ए+ ग्रेड मिली है।

विजय : (निराशा भरे स्वर में) "शिट्! मुझे तो बी+ ग्रेड मिली है। मुझे उम्मीद तो ए ग्रेड की थी। मैंने मेहनत भी की थी और पेपर भी अच्छे हुए थे। पता नहीं क्या हो गया?

दीप्ति : (ठंडी साँस छोड़ते हुए) भाई, अपने तो वही ढाक के तीन पात। बी–। इससे ज्यादा की तो उम्मीद भी नहीं थी।

कुणाल : (चेहरे पर मुस्कुराहट व निराशा दोनों के भाव लाते हुए) थैंक गॉड! इस बार बी+ तो मिला। वरना हर बार सी ही मिलता है परन्तु फिर भी घर पर तो डाँट पड़ने वाली है।

(इतने में कक्षा में प्रधानाध्यापिका का प्रवेश।)

प्रिन्सिपल : सुप्रभात बच्चो! आज तुम्हें तुम्हारा परीक्षाफल प्राप्त हुआ है। मैं जानती हूँ कि तुम में से कुछ बच्चों के रिजल्ट उम्मीद से बेहतर आए होंगे तथा कुछ–कुछ के उम्मीद से कम। परन्तु मैं चाहती हूँ कि तुम इन नतीजों को अपने दिल पर मत लो। ये नतीजे तुम्हारी कोशिशों और मेहनत का प्रतिफल हैं। परन्तु यह बात हमेशा याद रखना कि अच्छी ग्रेड लाना ही सब कुछ नहीं है। तुमने अपनी पूरी कोशिश की, यही काफी है। हाँ! तुम्हें अपने अपने नतीजों से कुछ न कुछ सीखना अवश्य चाहिए। बाकी की बात तुम्हारी कक्षा के अध्यापक तुम्हें समझा देंगे। मैं तो तुम्हें बधाई एवं शुभकामनाएँ देने आयी थी कि आज के बाद तुम सभी अगली कक्षा में बैठोगे।

सभी बच्चे : (खड़े होकर) धन्यवाद मैडम।

प्रिन्सिपल : वेलकम बच्चो।

(यह कहकर प्रिन्सिपल चली जाती है तथा अध्यापिका बच्चों से कहती है।)

अध्यापिका : बच्चो! तुमने सुना था न, हमारी प्रधानाध्यापिका मैडम क्या कह रही थी? हमें हमारे नतीजों से कुछ न कुछ सीखना चाहिए। अच्छा मुझे बताओ कि तुम सबने अपने–अपने नतीजों से क्या सीखा?"

अंशुल : मैडम, मुझे इस बार परीक्षा में बहुत अच्छे अंक मिले हैं। मैं इससे बहुत खुश हूँ। मुझे स्वयं पर गर्व है परन्तु अभिमान नहीं है। मुझे अभी आगे बढ़ना है इसलिए मुझे अभी रुकना नहीं है। मुझे हमेशा बेहतर नतीजे लाने के लिए लगातार मेहनत करनी है क्योंकि यह परीक्षा मेरा अन्तिम पड़ाव नहीं है।

अध्यापिका : बहुत अच्छा बिलकुल सही सोचा है तुमने। एक बार सफलता मिल गई इसका अर्थ यह नहीं कि अब हमेशा यूँ ही सफलता मिलती रहेगी। हर बार सफल होने के लिए नियमित रूप से प्रयास और मेहनत करनी ही पड़ेगी। हाँ अपनी इस सफलता से तुम प्रोत्साहित जरूर हो सकते हो। विजय, अब तुम बताओ। तुमने अपने परीक्षाफल से क्या सीखा?

विजय : मेरा परीक्षाफल मेरी उम्मीद से कम निकला है परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि मैं निराश होकर बैठ जाऊँ और मेहनत करना ही छोड़ दूँ या फिर सफल होने वालों से जलना शुरू कर दूँ। मैं जानता हूँ कि कोशिश करने वालों की ही जीत होती है और मैं

अपनी इस असफलता को चुनौती के रूप में स्वीकार कर भविष्य में नतीजे को सुधारने के लिए मैं और अधिक मेहनत करूँगा।

अध्यापक : बिलकुल सही। हमें असफलता से निराश होकर हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठना चाहिए। जीवन में कई बार ऐसा होता है कि हम जितनी मेहनत करते हैं, उतनी सफलता नहीं मिलती है। अब दीप्ति तुम बताओ तुमने क्या सोचा है?

दीप्ति : मैडम, मेरा रिजल्ट हर बार की तरह साधारण ही है मगर इसका अर्थ यह नहीं कि मैं भविष्य में अच्छे रिजल्ट की उम्मीद ही ना करूँ। मैं इसी तरह मेहनत करती रहूँगी क्योंकि केवल अच्छे अंक पाना ही सब कुछ नहीं होता। यदि मैं मेहनत करूँगी तो मैं मेरे सबक को भली–भाँति पढ़ूँगी जिससे मेरा ज्ञान बढ़ेगा और भविष्य में वही ज्ञान मेरे काम आएगा।

अध्यापक : बहुत अच्छी सोच है तुम्हारी। किताबी ज्ञान से ज्यादा व्यावहारिक ज्ञान ही जीवन में काम आता है। कुणाल, अब अपनी बताओ। तुमने क्या सोचा है?

कुणाल : मैडम मेरा नतीजा पहले से बेहतर है परन्तु उम्मीद से कम। इससे मैंने यह सबक सीखा है कि मेहनत का फल तो मीठा ही होता है। हाँ इस बार यह मुझे कम मिला है परन्तु मैंने सोचा है कि मैं अगली बार और भी अधिक मेहनत करूँगा ताकि भविष्य में अच्छी ग्रेड प्राप्त कर सकूँ।

अध्यापक : शाबाश बच्चो। मुझे इस बात की खुशी है कि तुम सभी ने अपने–अपने परीक्षाफल को सकारात्मक तरीके से लिया है। कोई भी मनुष्य पूरी तरह से श्रेष्ठ नहीं होता है। सभी में कुछ न कुछ कमी होती है। अपनी कमियों से और गलतियों से सीखना ही कामयाबी का मार्ग है। मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम भविष्य में भी इसी तरह परिश्रम और लगन से अपना काम करते रहोगे तथा सफल जीवन व्यतीत करोगे।

सभी बच्चे : (एक साथ) जी मैडम! हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे।

(पर्दा गिरता है।)

कुसुम अग्रवाल
कांकरोली (राजस्थान)

आओ पढ़ें : नई किताबें

ग्यारह बाल कहानियों की इस पुस्तक में संकलित कहानियों में विषय की विविधता, प्रस्तुति में सरलता और भाषा में रोचकता है। सभी कहानियाँ संदेशपूर्ण हैं जो अच्छी आदतों व जीवन मूल्यों को अपनाने की सहज शिक्षा देती हैं। सुन्दर रंगीन आवरण एवं चित्रों से सजी पुस्तक बालकों को आकर्षित करेगी।

पुस्तक का नाम : प्रीत लड़ी में सब बंधे **लेखक :** राजेश अरोड़ा
मूल्य : 200 रुपये **पृष्ठ :** 62 **संस्करण :** 2023
प्रकाशक : नवकिरण प्रकाशन, बीकानेर (राजस्थान)

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

मैं पराया नहीं

प्रेमा आज बहुत खुश थी, क्योंकि आज वर्षों बाद उसकी खाली गोद जो भरने जा रही थी। उसकी ममता के आँगन में भी अब किलकारियाँ गूँजने वाली थी। यह सब प्रेमा के पति सोहन के परम मित्र विशाल की सलाह से संभव हो सका था। प्रेमा और सोहन के कोई संतान नहीं थी। दोनों ऊपर से सहज रहने का प्रयत्न करते, किन्तु यह दुःख दोनों को ही भीतर से खोखला बना रहा था। विशाल ने दोनों की उदासी देखकर एक दिन सलाह दी कि वे किसी अनाथ बच्चे को गोद ले लें, जिससे उनके जीवन का सूनापन तो दूर होगा ही, साथ ही बच्चे को भी माँ–बाप का प्यार और एक अच्छा परिवार मिल जाएगा। प्रेमा और सोहन को भी उनकी सलाह पसन्द आई। वे सोचने लगे कि इस तरह नीरस जीवन जीने से तो अच्छा है कि हमारे प्रयासों से किसी की जिन्दगी सँवर जाए।

ये सोचकर दोनों ने एक बच्चे को गोद लेने का निश्चय किया। एक दिन सोहन ने प्रेमा से कहा– ''जल्दी से तैयार हो जाओ, आज मैंने ऑफिस से छुट्टी ले ली है, हम दोनों आज बच्चे को गोद लेने अनाथालय चल रहे हैं।'' प्रेमा यह सुनकर बहुत खुश हुई और जल्दी से तैयार होकर सोहन के साथ चल पड़ी। वहाँ उन्होंने सारी जरूरी कार्यवाही पूरी करके, 6 महीने के एक प्यारे से बच्चे को हमेशा के लिए अपना बना लिया।

वर्षों बाद आज प्रेमा की गोद में एक बच्चे की किलकारियाँ गूँज रही थीं। उसके कलेजे में ममता का उफान पैदा होने लगा। दोनों उस बच्चे पर अपना लाड़–प्यार लुटाते रहे। उसे पालने–पोसने में उन्होंने कोई कमी न छोड़ी। समय बीतने के साथ–साथ वे इस बात को भूल ही गए थे कि ये बच्चा उनका अपना खून नहीं है। अब वे दोनों उसे अपने कलेजे का टुकड़ा मान चुके थे।

प्रदीप भी माँ–बाप की ममता के आँचल तले पल रहा था। उसे तो पता ही नहीं था कि वह अनाथालय से लाया गया है। वह तो प्रेमा और सोहन को ही अपना असली माँ–बाप समझता था। लेकिन अधिक लाड़–प्यार ने उसे जिद्दी बना दिया था। वह अपनी मनचाही वस्तु पाने के लिए अकसर जिद कर बैठता और जब तक उसकी माँग पूरी न हो जाती, वो मुँह फुलाए रहता। जिद में आकर वह अकसर खाना–पीना भी छोड़ देता था, जिससे प्रेमा और सोहन परेशान हो जाते।

प्रदीप अब 12 साल का हो चुका था। वह पढ़ने में बहुत तेज था और कक्षा में सदा प्रथम श्रेणी में आता था, लेकिन उसकी जिद की आदत वैसी ही थी। प्रदीप को भी अपने मित्र की तरह साइकिल चाहिए थी और इसके लिए वह जिद पर अड़ा था। वैसे तो साइकिल लाना कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन कहीं उसे चोट न लग जाए, इस डर से प्रेमा और सोहन अभी मना कर रहे थे। सोहन ने उसे समझाया– ''बेटा थोड़ा और बड़े हो जाओ, फिर एक बढ़िया–सी साइकिल खरीद दूँगा।" लेकिन प्रदीप मानने को तैयार नहीं था।

तभी कई साल बाद एक दिन सोहन की बड़ी बहन रचना उसके घर आईं। उन्होंने जब प्रदीप को ऐसे हठ करते देखा तो उन्हें बिलकुल अच्छा नहीं लगा। एक दिन जब प्रदीप अपने मित्र के घर गया था तो मौका देखकर उन्होंने अपने भाई–भाभी को समझाते हुए कहा– ''भैया–भाभी एक पराए खून पर इतना प्यार लुटाना ठीक नहीं है। आजकल तो अपनी कोख का बच्चा भी अपना नहीं होता। वह भी बड़ा होकर माँ–बाप से मुँह मोड़ लेता है। फिर यह तो न जाने किसकी औलाद है? अपना मानने से कोई अपना खून नहीं बन जाता।"

प्रेमा और सोहन उसकी बात सुनकर झुँझला उठे और कहने लगे– ''आज के बाद वह कभी ऐसी बात न करे और ना ही इस बात का कभी जिक्र करे कि प्रदीप उनका अपना बेटा नहीं है।'' रचना ने भाई–भाभी के गुस्से को देखकर चुपचाप अपना मुँह बन्द कर लिया, लेकिन प्रदीप तब तक घर आ चुका था और कमरे के बाहर खड़ा होकर उनकी बातें सुन चुका था। उसे लगा मानो उसके पैरों के नीचे से धरती खिसकती जा रही हो और वह किसी सुनसान, उजाड़ जगह पर खड़ा हो, जहाँ भयंकर तूफान आया हो। असल में ये तूफान तो उसके अपने भीतर ही उठ रहा था। क्या वह अनाथ है? क्या ये उसके असली माँ–बाप नहीं हैं? तो फिर उसके असली माँ–बाप कौन हैं? उसे कहाँ से लाया गया है? वह इन सारे प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता था।

आज वह अपने आपको बेहद कमजोर महसूस कर रहा था। उसे इस बात पर भी ग्लानि हो रही थी कि जिन्होंने उसे अपने कलेजे से लगाकर पाला, उस पर अपने प्यार और ममता की दौलत लुटाई, वह कैसे जिद कर–करके उन्हें सताता रहा। उसकी आँखों से आँसू की धारा बह रही थी। वह घर से बाहर निकल गया और एक पार्क में खाली बेंच पर बैठकर काफी देर तक रोता रहा। रोते–रोते उसका मन हल्का हुआ तो उसने मन ही मन कुछ प्रण–सा किया और अपने घर की ओर चल दिया।

आजकल प्रेमा और सोहन प्रदीप के बदले हुए व्यवहार को देखकर बहुत चकित थे। अब वह न तो कोई जिद करता और ना ही उन्हें किसी बात के लिए परेशान करता। वह अपनी पढ़ाई करता रहता और अपने माता–पिता की हर बात चुपचाप मान लेता। अब वो अपने माता–पिता का बहुत अधिक आदर करने लगा था।

धीरे–धीरे प्रदीप बड़ा हुआ और अपनी पढ़ाई पूरी कर एक बड़ा ऑफिसर बन गया। उसकी कार्यकुशलता और ईमानदारी को देखते हुए, ऑफिस से उसे विदेश जाने का ऑफर मिला। ये उसके जीवन का एक सुनहरा मौका था, किन्तु प्रदीप ने उस ऑफर को ठुकरा दिया। उसने अपने देश में ही रहकर अपने माँ–बाप की सेवा करने का निर्णय लिया। प्रेमा और सोहन उसे बार–बार समझाते रहे कि वह इतने सुनहरे मौके को हाथ से न जाने दे और विदेश जाकर अपना भविष्य सँवारे। किन्तु प्रदीप तो कोई बात सुनने को तैयार ही नहीं था। उसने कहा– ''वह सुख मेरे किस काम का, जिसमें मेरे माता–पिता मेरे साथ न हों।" उसकी बात सुनकर सोहन और प्रेमा का कलेजा भर आया।

उन्होंने आपस में एक–दूसरे से आँखों ही आँखों में बात की और अपने आप को मजबूत बनाकर, उसे उसके जीवन का सच बताने का निश्चय किया। क्योंकि उन्हें लग रहा था कि प्रदीप

उन्हें असली माँ–बाप समझने के भ्रम में अपनी उन्नति का मार्ग अवरुद्ध कर रहा है। वे तो किसी भी तरह उसे खुश और प्रगति करते हुए देखना चाहते थे। इसलिए अब उनके पास सच बताने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा था।

प्रेमा की आँखें आँसुओं की निरन्तर बरसात कर रही थीं, क्योंकि वह तो अब इस बात को याद भी नहीं करना चाहती थी कि प्रदीप उसका अपना बेटा नहीं है। आखिरकार बहुत हिम्मत करके दोनों ने उसके सामने सच्चाई बयान कर दी कि वे उसके असली माँ–बाप नहीं हैं, जिनके लिए वह इतना बड़ा बलिदान दे रहा है। पर सच जानकर भी प्रदीप पर उसका तनिक भी असर न होते देख, वे आश्चर्य से भर गए।

प्रदीप धीरे–धीरे उनके पास आया और उनके गले से लिपटकर रो पड़ा। उसने कहा– ''मुझे ये बात बचपन में ही पता चल गई थी। जब बुआ जी आप लोगों से मेरे बारे में बात कर रही थीं, मैंने तभी सब सुन लिया था। मैं उस दिन बहुत रोया था, लेकिन फिर मैंने प्रतिज्ञा ली कि अब मैं जीवन में कभी भी ये नहीं सोचूँगा कि मैं आपका अपना नहीं, बल्कि पराया खून हूँ। क्योंकि जिन्होंने मुझे अपने कलेजे से लगाकर पाला–पोसा है, आज से अब वही मेरे असली माँ–बाप हैं।"

प्रेमा और सोहन उसकी ये बात सुनते ही फफक–फफक कर रो पड़े और प्रदीप को प्यार से पुचकारने लगे। प्रेमा ने कहा– ''बेटा! तू तो हमारे अँधेरे जीवन का उजियारा है। भगवान ने तुझे हमारे जीवन में रोशनी करने के लिए ही धरती पर भेजा है। क्या हुआ अगर तू मेरी कोख से नहीं पैदा हुआ, तू हमारा ही बेटा है।" प्रदीप ने प्रेमा की गोद में सर रखते हुए कहा– ''माँ! आज से कभी मुझे पराया मत समझना। सम्बन्ध तो आत्मा से होते हैं। वरना तो अपना खून भी पराया हो जाता है।" आज तीनों के मन से वर्षों का बोझ उतर चुका था और वे सम्बन्धों की प्रेम गंगा में स्नान कर रहे थे।

रंजना मिश्रा
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

दिमागी कसरत

इस बार प्रस्तुत है गणित के अंकों संबन्धी व्यावहारिक सवाल, आप इन्हें ध्यान से पढ़ें और हल करें :–

1. एक मकान का नम्बर तीन अंकों का है जो आरोही(Ascending) क्रम में है। अन्तिम अंक प्रथम अंक का वर्ग है और अन्तिम दो अंकों का अन्तर, प्रथम दो अंकों के अन्तर का वर्ग है। साथ ही प्रथम व अन्तिम अंक का योग उनके अन्तर से दुगुना है तो बताइये उस मकान का नम्बर क्या है?
2. दो अंकों की दो संख्याएँ है, प्रत्येक का योग 17 है किन्तु दोनों का अन्तर 9 है तो संख्याएँ बताइये।
3. आठ के अंक को आठ बार इस प्रकार लिखो कि योगफल 1000 हो।
4. एक झुंड में कुछ खरगोश व मुर्गियाँ हैं। ऊपर से गिनने पर 90 सिर दिखाई देते हैं और नीचे से गिनने पर 224 पैर तो बताइये झुंड में मुर्गियों और खरगोश की संख्या कितनी है?
5. एक दीवार घड़ी को छः घंटे बजाने में 30 सैकंड का समय लगता है तो बारह बजने पर 12 घंटे बजाने में कितना समय लगेगा ?

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

आओ जानें हमारा लोकतन्त्र

हमारा देश लोकतांत्रिक देश है। भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र कहा जाता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में गाँव से लेकर देश तक विभिन्न स्तरों पर चुनाव होते हैं। इन चुनावों में जनता जिनको चुनती है, वे जन प्रतिनिधि कहलाते हैं। जन प्रतिनिधियों पर यह जिम्मेदारी होती है कि जिस भूमिका के लिए भी वे चुने गए हैं, जनता के हित में और कानून के अनुरूप शासन चलायें और नागरिकों की जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए काम करें।

लोकतंत्र के सुचारु संचालन के लिए शासन व्यवस्था के तीन मुख्य अंग होते हैं –

- विधायिका (Legislature)
- कार्यपालिका (Executive)
- न्यायपालिका (Judiciary)

विधायिका का मुख्य काम होता है देश के लिए बेहतर कानून और योजनाएँ बनाना। जनता द्वारा चुने गए जन प्रतिनिधि विधायिका का हिस्सा होते हैं। कार्यपालिका, जिसमें सरकारी अफसर शामिल होते हैं, का मुख्य काम विधायिका द्वारा बनाए गए कानूनों और योजनाओं को लागू करना है। न्यायपालिका का काम कानूनों की समीक्षा और नागरिकों को न्याय प्रदान करना है।

विभिन्न स्तरों पर होने वाले चुनावों के माध्यम से चुने गए जन प्रतिनिधियों की विधायिका में निश्चित भूमिका होती है। हमारे देश में शासन

लोकतन्त्र

Democracy

- सबको अपना पक्ष रखने का हक
- प्रत्येक पक्ष के गुण–अवगुण पर चर्चा
- सर्वाधिक समर्थन प्राप्त पक्ष पर निर्णय

- Everyone has a right to express his view
- Open discussion on everyone's view
- View with maximum support decides

लोकतन्त्र की शासन व्यवस्था को 'जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का शासन' कहा जाता है। अर्थात लोकतन्त्र एक ऐसी शासन प्रणाली है, जिसके अन्तर्गत जनता चुनाव में भाग ले रहे किसी भी दल के उम्मीदवार को अपनी इच्छा से अपना वोट देकर अपना प्रतिनिधि चुन सकती है और उस दल की सरकार बना सकती है। जनता को यह अधिकार होता है कि गुण–दोष के आधार पर वह प्रत्येक उम्मीदवार को परखे और जो उसे सर्वश्रेष्ठ लगे, उसे अपना वोट दे। लोकतन्त्र में बहुमत के आधार पर निर्णय होते हैं – चुनाव में भी तथा किसी कानून को बनाने में भी।

पांच राज्यों के नए मुख्यमन्त्री

राजस्थान

श्री भजनलाल शर्मा
भारतीय जनता पार्टी

मध्यप्रदेश

डॉ. मोहन यादव
भारतीय जनता पार्टी

छत्तीसगढ़

श्री विष्णु देव साय
भारतीय जनता पार्टी

तेलांगना

श्री रेवन्त रेड्डी
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

मिजोरम

श्री लालदुहोमा
जोराम पीपल्स मूवमेंट

व्यवस्था को चलाने के लिए राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर, जिला स्तर, ब्लॉक स्तर, पंचायत स्तर, शहर स्तर और ग्राम स्तर पर व्यवस्थाएँ बनी हुई हैं।

लोकसभा चुनाव

राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले चुनाव लोकसभा चुनाव कहलाते हैं। ये चुनाव यह तय करते हैं कि देश में किस राजनैतिक दल की सरकार बनेगी। हर पाँच वर्ष बाद होने वाले ये चुनाव इस वर्ष यानी 2024 में होने जा रहे हैं। ये आजाद भारत के इतिहास में 18 वाँ लोकसभा चुनाव होगा।

इससे पूर्व 2019 में हुए लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को जीत मिली थी। 543 लोकसभा सीटों के लिए हुए चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के 303 सांसद विजयी हुए थे। चूँकि यह संख्या कुल लोकसभा सदस्यों की संख्या की आधी से अधिक थी, पार्टी के लिए यह स्पष्ट बहुमत था। इन चुने हुए सदस्यों ने अपने में से ही एक सांसद नरेन्द्र मोदी को प्रधानमन्त्री के रूप में चुना और भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें दूसरी बार प्रधानमन्त्री पद की शपथ दिलाई।

विधानसभा चुनाव

इसी प्रकार राज्य स्तर पर होने वाले चुनावों को विधानसभा चुनाव कहते हैं और इनमें चुनाव जीतने वाले जन प्रतिनिधि विधायक कहलाये जाते हैं। अभी हाल ही में राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना व मिजोरम में राज्य स्तर के चुनाव हुए। 3 व 4 दिसम्बर को इन राज्यों के चुनाव परिणाम घोषित हुए। जिस राजनैतिक दल को बहुमत मिला उस दल की सरकारें बनी। विधायकों ने एक विधायक को मुख्यमंत्री के रूप में चुना और उस राज्य के राज्यपाल ने उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई।

- ❖ इस प्रकार हम यह समझ सकते हैं कि लोकतन्त्र में चुनावों का कितना महत्त्व होता है। सही व्यक्ति का चुनाव जहाँ हमारे भविष्य को सुरक्षित रखने में सहयोगी बनता है वहीं गलत व्यक्ति का चुनाव देश के भविष्य को अँधेरे में भी डाल सकता है।
- ❖ चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करने अर्थात अपना वोट देने के लिये किसी भी नागरिक का 18 वर्ष का होना आवश्यक है। आप अभी बच्चे हो, आपको वोट देने का अधिकार नहीं है लेकिन लोकतन्त्र के बारे में जानकारी होना एवं वोट के महत्त्व को समझना आपके लिये अत्यन्त आवश्यक है। तभी आप भविष्य में एक जागरूक नागरिक की भूमिका निभाने में सफल हो सकेंगे।

आने वाले महीनों में हम इस विषय पर चर्चा जारी रखेंगे और आपको लोकतन्त्र के बारे में बेहतर समझ बनाने में मदद करेंगे।

– संचय जैन

शरारती होते हैं बन्दर

बन्दरों की उछलकूद से तो आप सभी अवगत होंगे ही। विशाल वृक्षों से मुंडेर पर कूदते तो आपने देखा होगा। जब बन्दरों की फौज आ जाती है तो उनकी शरारतें देखते ही बनती है। एक छत से दूसरी छत पर पहुँचना उनके लिए बाएँ हाथ का खेल है। घर–आँगन, छतों पर लगे फल और फूलदार पौधों को नष्ट करने में इन्हें बड़ा आनन्द मिलता है। छतों पर कोई खाद्य सामग्री सूखने के लिए रखी हो और बन्दर आ जाएँ तो पलक झपकते ही वे उसे खाकर या उठाकर चलते बनते हैं।

यदि आपके हाथ में कोई खाद्य सामग्री है और बन्दरों की नजर उस पर पड़ गई तो उन्हें आपके हाथ से छीनते देर नहीं लगेगी। धार्मिक स्थलों पर तो इनके झुंड के झुंड पाए जाते हैं। फल या सब्जी के ठेले हो या फिर खोमचे वाले सभी बन्दरों की शरारतों से परेशान रहते हैं।

बन्दरों की शरारत देखते ही बनती है। सच तो यह है कि समस्त जीवों में बन्दर ही सबसे अधिक शरारती होते हैं। निडर इतने कि लाख भगाओ, भागने की बजाय डटे रहेंगे और मुँह चिढ़ाते रहेंगे। जब लोग नदी, तालाब या झील में नहाने जाते हैं और अपने कपड़े किनारे पर रख जाते हैं, तो ये कपड़े लेकर चंपत हो जाते हैं। घड़ी पर्स, मोबाइल, फोन, चश्मा आदि भी ले भागते हैं और फिर ऊँचे पेड़ पर पहुँचकर अपनी जीत का जश्न मनाते हैं। आप लाख अनुनय विनय करें वे नहीं मानेंगे। हाँ! खाने–पीने का लालच ही आपको अपनी वस्तु वापस दिला सकता है। नकल करना बन्दरों का स्वभाव है। इनसानों की नकल करने में इन्हें बड़ा मजा आता है। बन्दर बाल कहानियों व कविताओं के भी प्रमुख पात्र होते हैं।

प्रायः सभी बन्दर अपने हाथों से फल तोड़कर खाते हैं, लेकिन मध्य तथा दक्षिण अफ्रीका में पाया जाने वाला मकड़ी बन्दर अपनी पूँछ से फल तोड़ने में सक्षम है। बन्दर की सभी प्रजातियों में मैकाक बन्दर ही एकमात्र ऐसा है जो अपना भोजन धोकर खाता है। ये बन्दर जापान में पाए जाते हैं।

बन्दरों की एक ऐसी प्रजाति है जिसका मुँह कुत्ते जैसा होता है और वे कुत्तों की तरह भौंकते भी हैं। यह पश्चिमी अफ्रीका में देखे जाते हैं। बन्दर की एक प्रजाति उल्लू की शक्ल जैसी होती है, जिसे आउल मंकी कहा जाता है। उल्लू की भाँति यह भी दिन में पेड़ के किसी कोटर में विश्राम करता है तथा रात में भोजन की तलाश में जाता है। बुश बेबी के नाम से जाना जाने वाला बन्दर यद्यपि उल्लू की शक्ल का तो नहीं होता, लेकिन दिन भर सोता है और रात में शिकार करता है। यह कीड़े मकोड़ों को पकड़कर खाता है।

बन्दरों की सभी प्रजातियों में चिम्पैंजी सबसे समझदार, बुद्धिमान और स्फूर्तिमान होता है। यदि इसे किसी बात का प्रशिक्षण दिया जाए, तो वह शीघ्र ही उसे सीख लेता है। बहुत से चिम्पैंजी तो ऐसे कार्य सम्पादित करते हैं, जिन्हें देखकर हम हैरत में पड़ जाते हैं। चिम्पैंजी मेज पर बैठकर काँटे छुरी से भोजन कर सकता है, वाद्ययंत्रों को बजा सकता है और पेंटिंग कर सकता है। टेलीफोन का डायल घुमा सकता है, साइकिल भी चला सकता है। है न बन्दरों की दुनिया बड़ी विचित्र!

किरण बाला
मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

दस सवाल दस जवाब

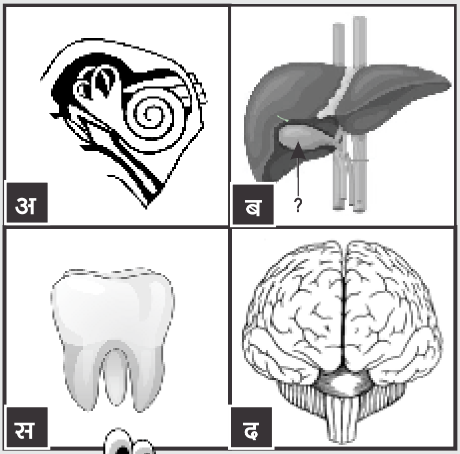

(1) मानव शरीर के इन अंगों के नाम बताइये।

(2) हमारे शरीर में कितने प्रतिशत जल होता है?

(3) शरीर की सबसे छोटी अस्थि कौन सी है?

(4) हमारी जीभ पर कितनी स्वाद कलिकाएँ पायी जाती हैं?

(5) शरीर का सबसे बड़ा अंग कौनसा है?

(6) मानव की आहार नाल कितनी लम्बी होती है?

(7) अस्थि में कौन सा लवण सबसे अधिक मात्रा में होता है?

(8) मानव शरीर में सबसे छोटी ग्रंथि कौनसी है?

(9) मनुष्य का कौनसा रक्त समूह सर्वग्राही (Universal Receptor) है?

(10) हमारी लार में कौनसा एंजाइम पाया जाता है?

उत्तर इसी अंक में

- एक बच्चा ग्वाले के पास जाकर बोला– ''भैंस का दूध है?
  ग्वाले ने कहा– हाँ।
  बच्चा – एक लीटर दे दो।
  ग्वाले ने कहा – तुम्हारा बर्तन छोटा है। इसमें कैसे आएगा?
  बच्चा बोला– छोटा है तो फिर भैंस का नहीं, बकरी का ही दे दो। बकरी का तो इसमें आ ही जाएगा।

- ग्राहक – बैरा, यह देखो सूप में मच्छर पड़ा हुआ है।
  बैरा– घबराइये नहीं, हम मच्छर का अतिरिक्त चार्ज नहीं लेंगे।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

ठंड की शैतानी

सुनो शीत की सभी कहानी,
बढ़ी ठंड की फिर शैतानी।
नहीं छोड़ता कभी किसी को
चाहे राजा हों या रानी।।

ठिठुर रहे हैं चाँद–सितारे
घुसे रजाई में अब सारे।
थर–थर काँपे सारी दुनिया
मौसम के आगे सब हारे।।
गर्म धूप कुछ लेकर आएँ
सूरज दादा बनकर दानी।
सुनो शीत की सभी कहानी।।

यह मौसम है क्रूर जरा सा
सेहत लेकिन खूब बढ़ाता।
खाने–पीने की बहार हो
चाट–पकौड़ा सब पच जाता।।
योग और व्यायाम करें तो
इस मौसम में हो आसानी।
सुनो शीत की सभी कहानी।।

मौसम कोई बुरा न होता
समझ न पाए जो वह रोता।
हर मौसम का लुत्फ उठायें
दादा हो या पोती–पोता।।
कुदरत के हैं रंग अनूठे
यही ज्ञानियों की है बानी।
सुनो शीत की सभी कहानी।।

किशोर श्रीवास्तव
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

ममता की छाँव में

मोरू बन गया मोर

पहले भोर हुई, फिर सुबह हुई। रातभर ठंडी हवा से सिकुड़े रहे पेड़, सुबह होने पर ताजे हो गए। जंगल जग चुका था। पेड़ डोलने लगे। पत्ते सरसराने लगे। पंछियों की चहचहाट शुरू हो गयी और, बच्चों ने खाने के लिए मचलना शुरू किया। यहाँ—वहाँ लेटकर फैले हुए प्राणी खड़े होने लगे। खड़े—खड़े सोने वाले प्राणी उठ गए। उन्होंने दोनों पैर खींचकर आलस देते हुए अपने बदन चाटने शुरू किए। तब उनके बदन से अपना बदन रगड़ते हुए उनके बच्चों ने कहा— ''ऊं भूख लगी है ना।'' उसी समय जंगल का मोर उठ गया। मोरनी भी उठ गयी। अपने पंखों को सँभालते हुए मोर ने बगल की घास में झाँककर देखा। उसे अपना बच्चू दिखायी नहीं दिया। मोर डर गया। उसने जोर से मोरनी को आवाज दी— "मियाँ मियाँ अरी, यहाँ आ जाओ झटपट। जल्दी से भागकर आओ।" मोरनी वाकई में जल्दी—जल्दी वहाँ आ गयी।

मोरनी ने आते ही झुँझलाकर कहा— "ऐसा क्या हुआ जो सुबह—सुबह चिल्ला रहे हो? मैं जरा पंख साफ़ कर रही थी और।" उसे रोकते हुए मोर ने डरते—डरते कहा— "अरी, अपना मोरू कहीं दिखायी नहीं दे रहा है। यह बच्चू रात को नींद में कहाँ चला गया पता नहीं?"

यह सुनते ही मोरनी बहुत ही ज्यादा डर गयी। मोरनी ने अगल—बगल, ऊपर—नीचे, पेड़ों के आगे—पीछे, पौधों के पीछे, नदी के किनारे पर टुकुर—टुकुर देखा। उसे अपना बच्चू कहीं भी नजर नहीं आया। उसे समझ नहीं आया, यह कैसे हो गया? मोरनी ने घबराकर कहा— "सुनिए, अपना मोरू न जाने कहाँ चला गया? दिखायी नहीं दे रहा है। मुझे ना जी, बहुत चिन्ता हो रही है। कहीं जाना था तो क्या बताकर नहीं जा सकता था? अब मोरू को कहाँ—कहाँ ढूँढ़ें? अब मन में गलत—सलत विचार आने लगे हैं।" डर के मारे मम्मी के चार पंख ही गिर गए।

मोर ने अपने सिर का ताज हिलाते हुए कहा— "हंह! डर क्यों रही हो? चलो हम ढूँढ़ते हैं। अपना मोरू बच्चू बहुत होशियार है ना। ऐसे ही कहीं, यहाँ—वहाँ गलत जगह पर जाएगा ही नहीं।" मोरनी का थोड़ा धीरज बँधा। मोर गर्दन हिलाते हुए, तेज—तेज चलते हुए मोरू को ढूँढ़ने लगा। यहाँ—वहाँ देखने लगा। कूदी लगाते हुए, गर्दन ऊँची करके, मोरू को जोर—जोर से आवाज देने लगा— "मियाँ, मियाँ, मोरू, अरे मोरू बच्चा।"

तभी पेड़ के पीछे की घास से आवाज आयी– "मम्मी, पापा, मैं यहाँ हूँ, मैं यहीं तो हूँ ना।" मोर अपने पंखों का फैलाव समेटते हुए दौड़कर मोरू के पास गया। जाते समय बच्चू के लिए खाना ले गया। मम्मी तो दौड़ते हुए मोरू के पास आयी। मम्मी ने अपने पंखों से मोरू को थपथपाया। चोंच से गर्दन के पास, गले के पास कूचुकूचु खुजाया।

पापा ने अपना लाया हुआ खाना मोरू बच्चू को जबरदस्ती से खिला दिया। मोरू ने ना–नुकूर करते हुए खाना निगल लिया और पापा के पंखों से अपनी चोंच रगड़कर मोरू ने अपना मुँह पोंछ लिया। मोरू को अपने गले से लगाकर मम्मी ने कहा– "कहाँ गया था मेरा बच्चा, बिना बताए? हमें कितनी चिन्ता हो गयी थी तुम्हारी! जान ऊपर–नीचे हो रही थी। कितना घबरा गयी थी बेटा मैं! फिर से ऐसा कभी मत करना। कहीं जाना हो तो ठीक से बताकर जाना और रात–बेरात तो बिलकुल भी कहीं नहीं जाना है, समझे।"

माथे का छोटा सा ताज, मम्मी के गले पर रगड़ते हुए मोरू ने कहा– "मम्मी, मुझे कल रात नींद ही नहीं आयी। मैंने बीच में आँखें खोलकर देखा, तो आप सब बड़े आराम से गहरी नींद सो रहे थे। लेकिन मुझे तो बहुत तकलीफ हो रही थी। बार–बार कुट–कुट तकलीफ। फिर मैं धीरे से उठा। धीमे से चलकर उस पेड़ के पास गया। हल्के से उड़कर उस सामने वाली नाटी डाल पर जाकर बैठ गया। सब ओर टुकुर–टुकुर देखा तो मैं अकेला ही जगा हुआ। बाकी सब, मतलब सभी पंछी सोये हुए। सभी प्राणी सोये हुए। खुशी–खुशी सोये हुए। लेकिन मुझे अकेले को ही तकलीफ। बार–बार कुट–कुट तकलीफ। फिर मैं वहाँ से उड़कर उधर, उस नदी के पास के ऊँचे टीले पर जा बैठा। वहाँ मेढक मामा जगे हुए थे। मक्खियाँ जगी हुई। रात के कीड़े जगे हुए। मच्छर चाचा जगे हुए। उन सबने पूरी तरह मेरा दिमाग खराब कर दिया। डरूँव डरूँव, गूँ गूँ गूँ गूँ, किरर किरर किरर किरर और फिर से... वे सभी खुश लेकिन बस मुझे अकेले को ही तकलीफ। बार–बार कुट–कुट तकलीफ! फिर तो मैं उस पेड़ के नीचे की नरम–नरम, मुलायम घास में छुप गया और कब मुझे नींद आ गयी यह तो मुझे पता ही नहीं चला, मम्मी।"

मम्मी ने मोरू को समझाते हुए कहा– "अरे मोरू, मेरे बच्चे, तुम्हें तकलीफ हो रही थी, नींद नहीं आ रही थी तो तुमने मुझे आवाज क्यों नहीं दी? मैंने मोर गीत गाये होते। तुझे प्यार से थपथपाया होता। मेरे पंखों का कम्बल ओढ़ाया होता। चोंच से तेरे पंखों की सुन्दर कंघी की होती। पापा ने तो अपने पंखों को फैलाकर तेरे लिए बढ़िया–सा 'थई–थई नृत्य' भी किया होता। अं... वह देखो, पापा तुम्हारे लिए बढ़िया–बढ़िया खाना लेकर आ रहे हैं।"

मोरू झुँझलाकर बोला– "मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा गाना–वाना। मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा थपथपाना। मुझे नहीं चाहिए पापा का नृत्य। मुझे अकेले को ही यह तकलीफ होती है। बार–बार कुट–कुट तकलीफ।" मोरू बच्चे को और भी अपने पास खींचते हुए मम्मी ने कहा– "ऐसे गुस्सा क्यों हो रहे हो मेरे बछड़े? तुझे आखिर हुआ क्या है? कौनसी तकलीफ हो रही है? कौनसी यह कुट–कुट तकलीफ है? मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा। सब कुछ मुझे ठीक से बताओ ना बच्चू।" मम्मी ने 'बच्चू' कहा तो मोरू खुश हो गया। मम्मी की ओर देखकर उसने अपने सिर का ताज इतराकर हिलाया। एक पैर को मोड़कर गर्दन टुकु–टुकु घुमायी।

इतने में पापा खाना लेकर आए। मोरू ने पापा के पंखों के फैलाव पर धीरे–से अपनी चोंच घुमायी और बोला– "कल रातभर मेरे पेट में, पीठ में कुछ तो कुट–कुट चुभ रहा था। इसलिए मुझे नींद ही नहीं आयी। टहनी पर बैठा, तब भी कुट–कुट चुभता है। पत्थर पर बैठा, तब भी कुट–कुट चुभता है। घास में छुप गया।"

देखें पृष्ठ 40....

व्हाट्सएप कहानी

अस्पताल में एक बेहद सीरियस पेशेंट आया। अस्पताल के मालिक डॉक्टर ने तत्काल खुद जाकर आईसीयू में केस की जाँच की। दो–तीन घंटे के ऑपरेशन के बाद डॉक्टर बाहर आया और अपने स्टाफ को कहा कि इस व्यक्ति को किसी प्रकार की कमी या तकलीफ न हो और उससे इलाज व दवा के पैसे न लेने के लिए भी कहा। वह मरीज करीब 15 दिन तक अस्पताल में रहा। जब वह ठीक हो गया और उसको डिस्चार्ज करने का दिन आया तो उस मरीज का ढाई लाख रुपये का बिल अस्पताल के मालिक और डॉक्टर की टेबल पर आया।

डॉक्टर ने अपने अकाउंट मैनेजर को बुलाकर कहा– ''इस व्यक्ति से एक पैसा भी नहीं लेना है। ऐसा करो, तुम उस मरीज को लेकर मेरे चेम्बर में आओ।'' मरीज व्हीलचेयर पर चेम्बर में लाया गया। डॉक्टर ने मरीज से पूछा– ''भाई! मुझे पहचानते हो?'' मरीज ने कहा– ''लगता तो है कि मैंने आपको कहीं देखा है।''

डॉक्टर ने कहा– ''याद करो, दो साल पहले सूर्यास्त के समय शहर से दूर उस जंगल में तुमने एक गाड़ी ठीक की थी। उस रोज मैं परिवार सहित पिकनिक मनाकर लौट रहा था कि अचानक कार में से धुआँ निकलने लगा और गाड़ी बन्द हो गई। हम लोगों ने चालू करने की खूब कोशिश की, परन्तु कार चालू नहीं हुई। अँधेरा थोड़ा–थोड़ा घिरने लगा था। चारों ओर जंगल और सुनसान था। परिवार के हर सदस्य के चेहरे पर चिन्ता और भय की लकीरें दिखने लगी थी। सब भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि कोई मदद मिल जाए। थोड़ी ही देर में चमत्कार हुआ। बाइक के ऊपर तुम आते दिखाई पड़े।''

''हम सबने दया की नजर से हाथ ऊँचा करके तुमको रुकने का इशारा किया। तुमने बाइक खड़ी करके हमारी परेशानी का कारण पूछा। तुमने कार का बोनट खोलकर चेक किया और कुछ ही क्षणों में कार चालू कर दी। हम सबके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। हम को ऐसा लगा कि जैसे भगवान ने तुम्हें हमारे पास भेजा है क्योंकि उस सुनसान जंगल में रात गुजारने के खयाल मात्र से ही हमारे रोंगटे खड़े हो रहे थे।''

''तुमने मुझे बताया था कि तुम एक गैराज चलाते हो। मैंने तुम्हारा आभार जताते हुए कहा था कि रुपए पास होते हुए भी मुश्किल समय में मदद नहीं मिलती। तुमने ऐसे कठिन समय में हमारी मदद की, इस मदद की कोई कीमत नहीं है, यह अमूल्य है। परन्तु फिर भी मैं पूछना चाहता हूँ कि तुम्हें कितने पैसे दूँ? उस समय तुमने मेरे आगे हाथ जोड़कर जो शब्द कहे थे, वे शब्द मेरे जीवन की प्रेरणा बन गये। तुमने कहा था कि मेरा नियम है कि मैं मुश्किल में पड़े व्यक्ति की मदद के बदले कभी कुछ नहीं लेता। मेरी इस मजदूरी का हिसाब भगवान रखते हैं।''

''उसी दिन मैंने सोचा कि जब एक सामान्य स्थिति का व्यक्ति इस प्रकार के उच्च विचार रख सकता है, और उनका संकल्प पूर्वक पालन कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं कर सकता। और मैंने भी अपने जीवन में यही संकल्प ले लिया है। यह अस्पताल मेरा है। तुम यहाँ मेरे मेहमान हो और तुम्हारे ही बताए हुए नियम के अनुसार मैं तुमसे कुछ भी नहीं ले सकता। ये तो भगवान की कृपा है कि उसने मुझे ऐसी प्रेरणा देने वाले व्यक्ति की सेवा करने का मौका दिया।'' डॉक्टर ने कुछ ठहर कर मरीज से कहा– ''तुम आराम से घर जाओ और कभी भी कोई तकलीफ हो तो बिना संकोच के मेरे पास आ सकते हो।''

मेरा देश : गाँव विशेष–13

वैदिक युग जैसा
कूर्मग्राम

दोस्तो, रामायण या महाभारत जैसे टीवी सीरियल देखते समय आपके मन में कभी न कभी यह विचार जरूर आया होगा कि काश! आज के युग में भी कोई ऐसी जगह होती जहाँ आप वैदिक काल या पौराणिक युग जैसा रहन–सहन देख पाते और वहाँ कुछ समय बिताकर एक नया अनुभव प्राप्त करते।

आपके लिए एक अच्छी खबर है। आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में स्थित है कूर्मग्राम जिसे वैदिक गाँव का नाम दिया गया है। यहाँ के लोगों का रहन–सहन, भाषा, संस्कृति, घर सड़क आदि सब कुछ वैसा ही है जैसा सदियों पहले हमारे पूर्वजों का हुआ करता था।

वैदिक काल की जीवनशैली

कूर्मग्राम निवासियों का दैनिक जीवन ब्रह्मकाल में भोर के 3:30 बजे शुरू होता है और रात 7:30 बजे सब सो जाते हैं। ये लोग खुद ही अपने कपड़े बुनते हैं और फल–सब्जी, दालें और अनाज अपने खेतों में उगाते हैं। यहाँ सब मिट्टी से बने हुए झोपड़े हैं जिनकी छतें खपरैल या घास फूस से बनी हुई हैं। 60 एकड़ के क्षेत्र में फैले इस गाँव में 56 लोग रहते हैं। यहाँ मोबाइल फोन, बिजली, इंटरनेट, टेलीविजन, कुकिंग गैस या किसी भी प्रकार की आधुनिक सुविधाएँ व अन्य उपकरण उपलब्ध नहीं हैं। सिर्फ एक लैंडलाइन फोन आपात स्थिति व आवश्यक सूचना पहुँचाने के लिए लगाया गया है।

सादा जीवन उच्च विचार

यहाँ के लोगों ने निश्चय किया है कि वे सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को साकार करेंगे, कम से कम साधनों का प्रयोग करेंगे और जीने के असली उद्देश्य परोपकार और मनुष्यता जैसी भावनाओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। यहाँ के लोग श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त हैं और कर्म पर विश्वास करने वाले हैं।

विद्यार्थियों को सम्पूर्ण शिक्षा

यहाँ विद्यार्थियों को गणित, विज्ञान, संस्कृत, तेलुगू, हिन्दी, अँग्रेजी, शास्त्र, कलाएँ और महाभारत पढ़ाया जाता है। महाभारत एवं इतिहास पर आधारित नाटकों का मंचन भी समय–समय पर करते रहते हैं। रोज पौराणिक कथाओं का वाचन और संगीत का अभ्यास भी करवाया जाता है। बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान दिया जाता है। तैराकी, कबड्डी, सात कुड्डी जैसे पारम्परिक खेलों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

छात्रों के लिए 3 तरह के कोर्स हैं– भक्ति वृक्ष, भक्ति शास्त्री, भक्ति वैभव। प्रत्येक कोर्स 10 वर्ष का है। छात्र किसी एक कोर्स का चयन कर सकते हैं। आगे की पढ़ाई तमिलनाडु के सेलम में स्थित वैदिक विश्वविद्यालय में करवाई जाती है। यहाँ हमारे देश के ही नहीं विदेश के भी छात्र आते हैं। इस गाँव में अर्जेंटीना, इटली और रूस जैसे देशों से भी विद्यार्थी आए हुए हैं जिनकी रुचि भारतीय धर्म और संस्कृति में है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

ये हैं मेरी अच्छी दोस्त

प्रतीक सहज एवं मिलनसार व्यक्तित्व का धनी था। इसी वर्ष उसने अनुराग के विद्यालय में उसी की कक्षा में प्रवेश लिया था। उसका स्वभाव ही ऐसा था कि सभी विद्यार्थी उससे मित्रता करने को लालायित रहते। वह भी सभी से प्रेम से मिलता। उसने प्रथम टेस्ट में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये जिससे पूरी कक्षा में पहचान बनी तथा गणतन्त्र दिवस के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाकर जल्दी ही अपनी श्रेष्ठता का डंका बजा दिया था।

उसके विद्यालय में आने से पूर्व हमेशा अनुराग ही कक्षा में प्रथम आया करता था अतः प्रतीक एवं अनुराग में जल्दी ही प्रगाढ़ मित्रता हो गई। प्रतीक के पिता का स्थानान्तरण जिला कार्यालय में हो जाने से उन्हें इस शहर में आकर रहना पड़ रहा था। उन्होंने अनुराग के घर के निकट ही एक फ्लैट किराए पर लिया था। इस प्रकार अनुराग व प्रतीक सहपाठी होने के साथ–साथ पड़ोसी भी थे। उन दोनों में धीरे–धीरे अच्छी पटने लगी थी।

एक रोज विद्यालय से आने के बाद अनुराग ने अपना गृहकार्य पूरा किया। उसके बाद वह टीवी पर अपनी पसन्द का शो देखने लगा। उसी समय प्रतीक उसके घर आया। "प्रणाम आंटीजी।" उसने अनुराग की मम्मी के पैर छूते हुए कहा– "अनुराग घर पर है क्या?" "खुश रहो बेटा। हाँ वह अभी टीवी देख रहा है। आओ, बैठो, चाय लोगे तुम?" प्रतीक ने कहा– "नहीं आंटीजी, मैं चाय नहीं पीता।" तब तक अनुराग बाहर आ गया था। उससे प्रतीक ने कहा– "चलो न थोड़ी देर पार्क में बैडमिंटन खेलते हैं।" अनुराग अपनी पसन्द का शो भी नहीं छोड़ना चाह रहा था तो प्रतीक के आग्रह को टालना भी उसे ठीक नहीं लगा। उसके पापा भी उसे समझाते थे कि थोड़ा समय पार्क में ऐसे खेलों में भी देना चाहिए जिससे थोड़ा शरीर का व्यायाम हो जाए। "अब चलो भी। किस सोच में डूब गए?" "हाँ मैं चल रहा हूँ।"

वह प्रतीक के साथ पार्क की ओर बढ़ा। धीरे–धीरे उसे टीवी शो की अपेक्षा खेलना ज्यादा अच्छा लगने लगा। उसके शरीर में भी अब पहले से अधिक स्फूर्ति रहने लगी। बैडमिंटन का खेल

उनका नियमित क्रम बन गया था। उनके कुछ अन्य सहपाठी भी अब उनके साथ आने लगे थे। प्रतीक हर गतिविधि में आगे रहा करता था। वह अन्य विद्यार्थियों से सहयोग का भाव रखता था। विद्यालय में शनिवार का दिन तो मानो उसी के लिए आता था। शनिवार को 'नो बैग डे' होता था। किसी भी गतिविधि के लिए नाम पुकारा जाए तो प्रतीक हरदम तैयार। कक्षा में जब चुटकले सुनाए जाते तो ज्यादातर विद्यार्थी व्हाट्सएप पर पढ़े–सुने चुटकले ही सुनाते लेकिन प्रतीक ऐसे चुटकले कहता जो शायद ही किसी ने पहले कभी सुने हो। जब वह पहेलियाँ पूछना शुरू करता तो विद्यार्थी तो विद्यार्थी, शिक्षक भी दाँतों तले अँगुली दबाने को मजबूर हो जाते। प्रार्थना सभा में वह नए–नए प्रेरक प्रसंग भी प्रस्तुत करता था।

एक दिन अनुराग ने पूछ ही लिया– "तुम इतनी सारी नई–नई बातें व जानकारियाँ कहाँ से ले आते हो? कभी मुझे भी बताओ।" प्रतीक ने कहा– "अवश्य बताऊँगा। पहले तुम बताओ, तुम्हें ऐसी जानकारी की जरूरत हो तो तुम कहाँ से जुटाओगे?" ''इस मोबाइल से। तुम तो जानते ही हो दुनिया भर का सारा ज्ञान तो इंटरनेट पर उपलब्ध है। कुछ चीजें व्हाट्सएप पर मिल जाती हैं और बाकी के लिए गूगल है ही।" "सही कहा तुमने। लेकिन इंटरनेट पर सच्ची व झूठी दोनों तरह की चीजें मिलती है। फिर इंटरनेट के उपयोग में हमें विवेक की भी आवश्यकता होती है।"–प्रतीक ने कहा।

"मतलब?" अनुराग ने पूछा। प्रतीक ने उत्तर दिया– "मतलब कई चीजों के सम्बन्ध में हम बच्चे होने के कारण यह निर्णय नहीं ले पाते हैं कि हमारे लिए क्या सही है और क्या गलत।" अनुराग ने भी जोड़ा– "हाँ, पापा भी मुझे अकसर यह कहते हैं कि फोन चलाओ लेकिन तुम्हें यह भी पता होना चाहिए कि फोन में क्या चलाना है। लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं?" प्रतीक ने बात आगे बढ़ाई– "हमें अच्छे दोस्तों की मदद लेनी चाहिए। मेरे पापा की मदद से मुझे भी कुछ अच्छी दोस्त मिली हैं, जो मुझ तक वे सभी चीजें पहुँचाती हैं जो मुझे जाननी चाहिए तथा जो मेरे लिए उपयोगी हो।"

"पहेलियाँ मत बुझाओ। ऐसी कौनसी दोस्त हैं तुम्हारी? मैंने तो कभी नहीं देखा उन्हें तुम्हारे साथ खेलते हुए।" "आज शाम को मेरे साथ मेरे घर चलना। मैं तुम्हें उनसे मिलवाऊँगा। लेकिन एक शर्त है...तुम्हें भी उनसे दोस्ती करनी पड़ेगी।" "मुझे स्वीकार है।" "तो फिर मिलते हैं आज शाम को।" शाम को अनुराग प्रतीक के साथ उसके घर गया। वह उसकी अच्छी दोस्त से मिलने के लिए उतावला हो रहा था। प्रतीक की मम्मी ने उसका स्वागत किया। "प्रतीक अकसर तुम्हारे बारे में बात करता रहता है। अच्छा किया आज तुम घर आए।" उन्होंने कहा।

"यह मेरी अच्छी दोस्त से मिलना चाहता था इसलिए मैं इसे घर ही ले आया।'' प्रतीक ने कहा। "तो मिला दो इसे भी अपनी दोस्त से। मैं तब तक नींबू पानी तैयार कर देती हूँ।" मुस्कराते हुए उन्होंने कहा। "चलो उस कमरे में।" प्रतीक ने उसे संकेत किया। अनुराग ने देखा कमरे के बाहर एक स्टिकर लगा हुआ था, जिस पर लिखा था– "अच्छी पुस्तकें जीवित देव–प्रतिमाएँ हैं। उनकी आराधना से तत्काल ज्ञान एवं प्रकाश मिलता है।" कमरे का दरवाजा खुलते ही अनुराग ने जो देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गई।

प्रतीक का यह कमरा एक छोटी लाइब्रेरी के समान लग रहा था। दीवार के पास दो रेकों में ढेर सारी पुस्तकें व्यवस्थित जमा कर रखी गई थी। मेज पर तीन–चार पत्रिकाएँ पड़ी थी। "ये सभी मेरी बहुत अच्छी दोस्त हैं। ये मुझे जीवन में सही दिशा देती हैं। इनसे मुझे वह सारा ज्ञान मिलता है जो मेरे लिए आवश्यक है। साथ ही इनसे मिलने वाली जानकारी प्रामाणिक भी होती है।" अनुराग पन्ने पलट कर पत्रिकाओं को देखने लगा। उसे लगा जैसे वह आनन्द के सागर में गोते लगा रहा हो। सुन्दर आकर्षक चित्रों से परिपूर्ण

बूझो तो जानें

1

धरती में छेद बनाया
उसमें भर आया पानी,
घड़ा अपना भरने को
रस्सी से खींचे रानी।

5

यहाँ बहुत पाए जाते
पेड़ और भालू, हाथी,
खूब सँभल कर चलना तुम
सुनसान डगर है साथी।

2

गाँव कस्बों में पाया जाए
भैंसों को ये बहुत ही भाए,
बच्चे तैरना इसमें सीखे
गाँव की शोभा कहलाए।

3

गर्मी में अच्छी लगती
पर जाड़े में ना भाती,
ना वो किसी को दिखती
ना हाथ किसी के आती।

4

दूर-दूर तक रेत है
कुछ भी न नजर आए,
जल के बिना भटके तो
अपनी जान गवाँए।

प्रवीन कुमार, रेवाड़ी (हरियाणा)

उत्तर इसी अंक में

इन पत्रिकाओं में कविताएँ, कहानियाँ, उपयोगी ज्ञानवर्धक लेख, पहेलियाँ, चुटकले क्या कुछ न था। अब उसे प्रतीक के सशक्त व्यक्तित्व का रहस्य समझ में आ गया था।

"मैं भी अब अपने पापा से कहूँगा कि मेरे लिए भी वे ऐसी अच्छी दोस्त लेकर आए। सचमुच तुम्हारी ये सभी दोस्त बहुत अच्छी हैं।" "इन्हें भी अपनी ही समझो। तुम जब चाहे यहाँ आकर प्रतीक के साथ इन्हें पढ़ सकते हो। मनुष्य के लिए पुस्तकें जीवन में सर्वश्रेष्ठ मित्र के समान होती हैं।" नींबू पानी लेकर आते हुए प्रतीक की माँ ने कहा तो तीनों के चेहरों पर मुस्कान थिरकने लगी।

यशपाल शर्मा 'यशस्वी'
पहुँना (राजस्थान)

कितने आयत, कितने त्रिभुज ..?

यहाँ एक वर्ग में कुछ रेखाएँ खींच दी गई, जिसमें कुछ आयत और त्रिभुज बन गए... अब चित्रकार को पता नहीं चल रहा ... क्या आप कुछ मदद कर सकते हैं ...?

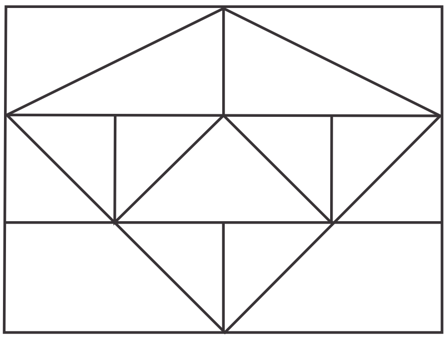

उत्तर इसी अंक में

– राकेश शर्मा राजदीप, उदयपुर

दिल्ली का लाल किला

बच्चो, आप जानते हैं कि प्रतिवर्ष पन्द्रह अगस्त को देश के प्रधानमन्त्री लाल किले पर हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराते हैं। देश के नाम सम्बोधन भी देते हैं। लालकिले की ऊँची प्राचीर और बड़े–बड़े द्वार देखकर आपको आश्चर्य होता होगा। मन में खयाल आता होगा कि इस भव्य इमारत को कब और किसने बनाया था?

मुगल सम्राट शाहजहाँ स्थापत्य कला का विशेष प्रेमी था। उसने भारत में अनेक इमारतों का निर्माण कराया। वर्ष 1638 ई. में उसने उस्ताद अहमद लाहौरी के नेतृत्व में लालकिले का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया। जो लगभग दस वर्षों में बनकर तैयार हुआ। सन् 2007 ई. में यह यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल हुआ है। यमुना नदी के किनारे बने इस किले का पुराना नाम– 'किला ए मुबारक' था। लाल बलुआ पत्थर की ऊँची–ऊँची दीवारों से घिरे इस किले के अन्दर अनेक इमारतें अपनी भव्यता और सुन्दरता के कारण पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

दिल्ली की आन, बान और शान यह लाल किला अष्टकोणीय आकार में बनाया गया है। इसमें अन्दर जाने के लिए दो प्रमुख गेट हैं– लाहौरी गेट और दिल्ली गेट। किले के अन्दर विशाल परिसर में मोती मस्जिद, नौबतखाना, मुमताज महल और रंग महल, नहर–ए–बहिश्त मयूर सिंहासन, जैसी दिलकश इमारतें भी हैं। दीवाने आम और दीवाने खास मुगल स्थापत्य के बेजोड़ नमूने हैं। कोहिनूर हीरा भी कभी लालकिले की शानोशौकत में चार चाँद लगाता था। जिसे उखाड़ कर अँग्रेज अपने साथ ले गए।

लाल किले के अन्दर लाइट और साउंड शो का आयोजन हिन्दी और अँग्रेजी भाषा में किया जाता है। मौसम के अनुसार इसकी टाइमिंग में अन्तर आता है। लालकिला घूमने और देखने के लिए नवम्बर से मार्च का समय अनुकूल रहता है। देश–विदेश के हजारों सैलानी प्रतिदिन यहाँ पर आते हैं। दिल्ली मैट्रो स्टेशन इसके ठीक सामने है। लालकिला भारतीय इतिहास को बयां करता हुआ नजर आता है।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

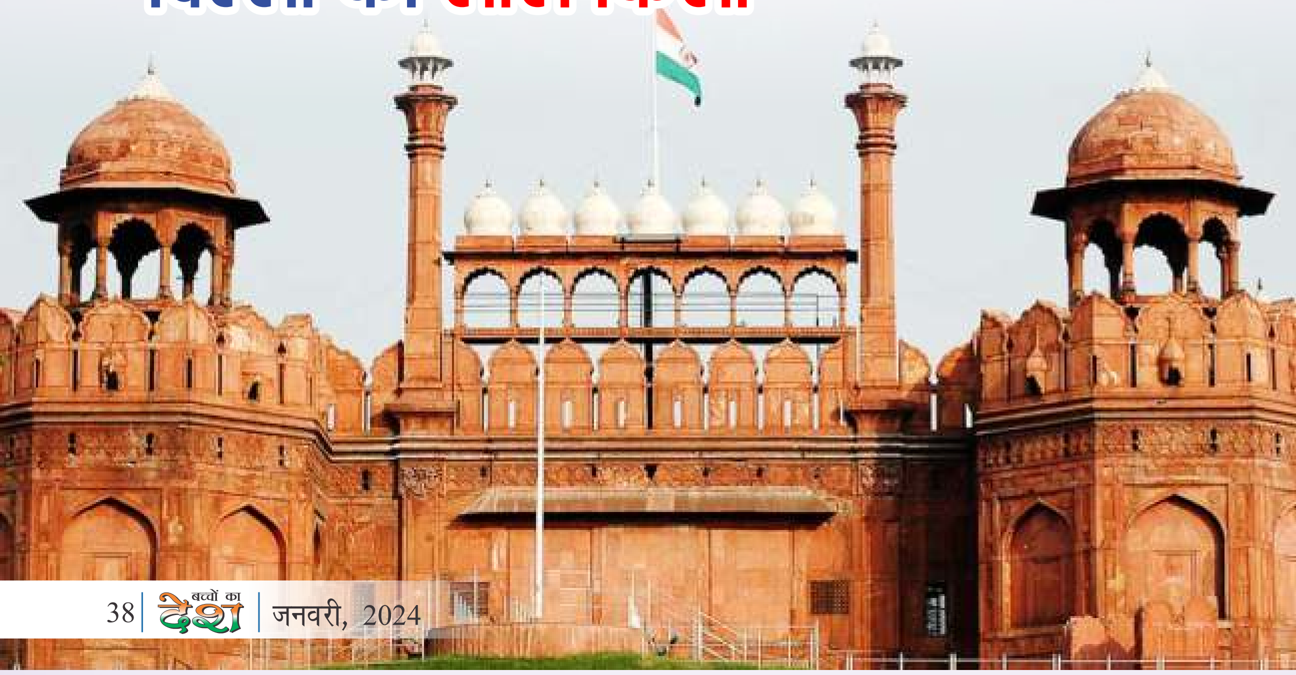

रोली और छवि

रोली और छवि दो बहनें थीं। वे तीसरी व पाँचवीं कक्षा में पढ़ रही थीं। दोनों अपने माता–पिता के साथ जा रही थीं। आज कॉलोनी में गीत–संगीत का आयोजन था। बहुत सुन्दर सजावट की गई थी तथा मैदान में जगह–जगह आटे, सूजी, मैदा तथा रंगीन रेत से रंगोली बनाई जा रही थी।

रोली ने मम्मी से पूछा– ''ये रंगोली क्या होती है ? यह कैसे बनती है ?'' तब माँ ने बताया – ''बच्चो, यह रंगोली एक ऐसी कला है जो आटे में हल्दी कुमकुम मिलाकर कोई भी बना सकता है। इतना ही नहीं फूलों से भी रंगोली बन सकती है।''

तभी पापा ने कहा– ''यह रंगोली शब्द संस्कृत के एक शब्द 'रंगावली' से लिया गया है। ये भारत की वह रंगबिरंगी कला है जो हर शुभ मौके पर बनाई जाती है। ऐसी मान्यता है कि मन को प्रसन्न करने के लिए किसी भी अच्छे अवसर पर यह रंगोली बनाई जाती है।''

रोली ने रंगोली के बारे में और भी जानना चाहा तो पापा ने कहा– ''भारत जैसे सांस्कृतिक देश में जहाँ त्यौहारों का आए दिन उत्सव और आनन्द का मेला लगा रहता है, ऐसे देश में रंगों का बहुत बड़ा महत्त्व है। यह रंग ही तो इन त्यौहारों में जान डालते हैं। रंगों के बिना कोई भी भारतीय त्यौहार अधूरा है, फिर चाहे वह नया साल हो, वसंत हो, रंगों का उत्सव होली हो, गणेश चतुर्थी और दुर्गा अष्टमी हो या फिर दिवाली हो। सभी त्यौहारों में भारतीयों द्वारा रंगों का इस्तेमाल जरूर किया जाता है। दिवाली पर भी बड़े चाव से घर की औरतों द्वारा रंगोली बनाई जाती है। फूल, रंगदार चीजें और जलते हुए दिये की मदद से घर की दीवारों या फिर जमीन पर सुन्दर आकृतियाँ बनाई जाती हैं।''

तब तक चारों आयोजन स्थल तक पहुँच गये थे। कार्यक्रम बहुत रंगारंग था। वहाँ से लौटने के बाद रोली और छवि ने देखा कि उनकी हिन्दी की पुस्तक में भी रंगोली के बारे में लिखा है कि वर्षों से भारत में त्यौहारों पर रंगोली बनाने का रिवाज चला आ रहा है। प्राचीन दृष्टि से रंगोली संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है रंगों के जरिये भावों को प्रकट करना। लेकिन इसे भारत के कुछ क्षेत्रों में अल्पना के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। अल्पना भी एक संस्कृत शब्द 'अलेपना' से बना है, जिसका अर्थ है लीपना अथवा लेपन करना। क्योंकि रंगोली बनाते समय रंगों के प्रयोग से दीवारों पर या फिर जमीन पर लेपन ही तो किया जाता है।

प्राचीन समय से ही रंगोली बनाना काफी प्रचलन में पाया गया है। आज भी भारत के कुछ ग्रामीण इलाकों में घर की दीवारों को रंगोली की आकृतियों से सजाया जाता है। लेकिन आधुनिक भारत में खासतौर पर रंगोली का इस्तेमाल त्यौहारों तक ही सीमित रह गया है। अब तो ज्यादातर रंगोली को हर एक तरह के उत्सव पर बनाया जाता है। चाहे जन्मदिन हो या किसी का नया घर बना हो।

रंगोली महज एक कलात्मक अथवा सजावटी वस्तु नहीं है। रंगोली के सुन्दर रंग घर में खुशहाली एवं सुख–समृद्धि लाते हैं। भारत के कई क्षेत्रों में रंगोली बनाते समय कन्याओं द्वारा लोक–गीत भी गाए जाते हैं। इसके अलावा रंगोली के रंग तथा विभिन्न आकृतियाँ मन में सकारात्मक ऊर्जा को लाती हैं। रंगोली का महत्त्व भारत में तब ज्यादा बढ़ जाता है जब इसे मन की खुशी से जोड़ा जाता है।

छवि और रोली को यह सब जानकारी पढ़कर बहुत ही अच्छा लगा।

मुग्धा पांडे
दिल्ली

REUSE PAPER

REUSE
REDUCE
RECYCLE

Paper comes from tree. Saving paper means saving trees. Trees are home to birds and animals. Trees help to keep the air clean. When we destroy trees, we are harming ourselves.

- Use every bit of paper.
- Write on the both sides of the pages of notebooks.
- Print on the reverse side of used computer paper also.
- Use any kind of used paper as wrapping paper.

'मोरू बन गया मोर' पृष्ठ 32 का शेष...

बैठा, तब भी कुट–कुट चुभता है। घास में छुप गया।"

यह सुनते ही मम्मी मोरनी खुशी से चिल्लायी– "मियाँ रे, मियाँ रे, अरे मेरे मोरू बच्चे, अब तुम मोरू नहीं रहे। मोरू नहीं रहे। तुम... अब... मोर... बन गए हो...मोर। मोरपंख के आने से पहले हर मोर को थोड़ी सी तकलीफ होती है मेरे बच्चे। मोरपंख के आने से पहले पेट में, पीठ में थोड़ी–थोड़ी कुट–कुट चुभन होती है बछड़े। अरे मोरू, अब तुझे भी पापा की तरह मोरपंखों का बढ़िया, लम्बा, सुन्दर फैलाव मिलेगा। उसे सँभालते हुए, तू इतराकर चलेगा। ठुमक–ठुमक कर चलेगा। इस साल बरसात में... तू पापा के साथ, अपना मोरपंखी सुन्दर–सुन्दर फैलाव फैलाकर मस्त–मस्त नाचेगा। मेरा बच्चू मोरू... अब मोर बन गया रे, मोर।" खुशी से मम्मी की आँखें छलक आयी। मोरू की ओर देखते हुए उसने धीरे से अपनी आँखें मूँद ली। पापा ने अपना मोरपंखी फैलाव फैलाया और नाचते हुए मोरू के इर्द–गिर्द चक्कर लगाए और अचानक मोरू भी पापा मोर की तरह नाचने लगा। मम्मी मोरनी ने धीरे–से आँखें खोलकर देखा, तो उसके सामने नाच रहे थे, सुन्दर मोरपंख फैलाए हुए दो मोर।

लेखक : राजीव तांबे
पूणे (महाराष्ट्र)
अनुवाद : डॉ. विशाखा ठाकूर
मुम्बई (महाराष्ट्र)

पढ़ो और जीतो

यहाँ दिये दस प्रश्नों के उत्तर इसी अंक की सामग्री पर आधारित है। आप पत्रिका पढ़ें और उनके सही उत्तर खोजकर एक कागज पर लिखें। अपना नाम, कक्षा, शहर व मोबाइल नं. भी इस पत्र पर लिखना है। उसका फोटो हमें व्हाट्सएप नं. 9351552651 पर **दिनांक 31.01.24** तक भेजें। सर्वश्रेष्ठ उत्तर पर पुरस्कार दिया जाएगा।

1. लाल किले का निर्माण किसने करवाया ?
2. प्रतीक की सबसे अच्छी दोस्त कौन थी?
3. सावित्री बाई फुले के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
4. ट्रेन को दुर्घटना से बचाने के लिए बच्चों ने क्या उपाय किया?
5. "दादाजी, ये धार्मिक लोग भी इतने झगड़ते क्यों हैं?" यह वाक्य किसने कहा ?
6. यह किस कहानी में सिद्ध हुआ कि चूहा ही दुनिया में सबसे ताकतवर है ?
7. व्हाट्सएप कहानी का क्या संदेश है?
8. सबसे ज्यादा बुद्धिमान बन्दर किसे माना जाता है?
9. हिन्दू नव वर्ष का पहला दिन कब होता है?
10. सांसद और विधायक में क्या अन्तर है?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) अन्तः कर्ण (Internal Ear) (ब) पिताशय (Gall Bladder) (स) चर्णवक दंत (Molar) (द) मस्तिष्क (2) 66 % (3) स्टेपिज अस्थि (कान में) (4) नौ हजार मात्र (5) त्वचा Skin (6) 32 फीट (7) कैल्शियम फास्फेट (8) पीयूष ग्रंथि (Pitutary Gland) (9) AB रक्त समूह (10) टायलिन

अन्तर ढूँढ़िए

(1) बादल का रंग अलग (2) पतंग का आकार बड़ा (3) पतंग की पूँछ गायब (4) लड़की की स्कर्ट का रंग अलग (5) सूरज अतिरिक्त (6) गमले का आकार छोटा (7) लड़के के टी–शर्ट पर B अतिरिक्त (8) धागे की एक रील गायब

दिमागी कसरत

(1) 359 (2) 98 और 89 (3) 8+8+8+88+888 = 1000 (4) 22 खरगोश, 68 मुर्गियाँ (5) 66 सैकंड

बूझो तो जानें

(1) कुआँ (2) तालाब (3) हवा (4) रेगिस्तान (5) जंगल

कितने आयत, कितने त्रिभुज ?

10 आयत और 20 त्रिभुज

सदस्यों से .... पत्रिका के सदस्य बनने और सदस्यता जारी रखने के लिए तथा पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें – 9414343100

वर्ग पहेली

1 छ	ब्बी	2 स	3 ज	4 न	व	5 री	
त्ती		6 ला	ल	न		7 ता	8 ज
9 स	10 ह	म	ना		11 ज		ठ
12 ग	ला				13 ग	ज	रा
14 ढ	ह	15 ना		16 धा	म		ग्नि
	17 ल	च	क		18 गा	19 ना	
20 क		ने		21 सू	ना	प	22 न
23 वि	वे	का	नं	द		24 ना	ग

सुडोकू

5	3	4	6	7	8	9	1	2
6	7	2	1	9	5	3	4	8
1	9	8	3	4	2	5	6	7
8	5	9	7	6	1	4	2	3
4	2	6	8	5	3	7	9	1
7	1	3	9	2	4	8	5	6
9	6	1	5	3	7	2	8	4
2	8	7	4	1	9	6	3	5
3	4	5	2	8	6	1	7	9

यशवर्धन अग्रवाल, कक्षा 4, बीकानेर

काव्या नारायण, कक्षा 5, रायपुर (भीलवाड़ा)

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 9, दिल्ली

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 9, ठाणे (महाराष्ट्र)

अक्षय कुमार, कक्षा 8, बीकानेर

दीपशिखा, कक्षा 2, बीकानेर

महात्मा गांधी

हिंद के सपूत बापू ने जन्म लिया,
भारत माता का मान बढ़ा लिया ।

गांधी जी विश्व में शांति चाहते थे,
बापू मानवता की रक्षा चाहते थे ।

करमचंद गांधी के वो प्रिय बेटे थे,
पुतली बाई के भी लाड़ले बेटे थे ।

किसानों ने उनको प्रिय बापू कहा,
रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने महात्मा कहा।

बहुत बड़े देशभक्त थे बापू हमारे,
राष्ट्रपिता कहलाते बापू हमारे ।

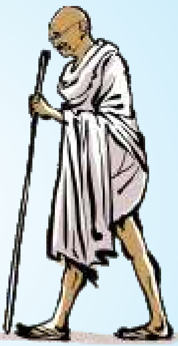

पाखी जैन, कक्षा 5, उदयपुर

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें
मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

राष्ट्रीय बालिका दिवस

मीरा भील

संगीता

छाया

नारायणी भील

राधा

रीना

सुशीला

पायल

भावना

गीता

पूजा

कोमल

रेखा भील

सोनू

अन्नू

रामगनी

: सामग्री सौजन्य :

आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- सहाड़ा, भीलवाड़ा

नन्हा
अखबार
देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

शांति का संदेश एक लाख चाकुओं से बनी प्रतिमा

दक्षिण ब्रिटेन के बोल्टन में शांति का संदेश देने के लिए इस प्रतिमा को रखा गया है। कलाकार एल्फी ब्रैडले ने चाकुओं से बनाया है। ये चाकू कभी न कभी किसी अपराध के लिए इस्तेमाल किए जा चुके हैं। ब्रिटिश पुलिस और सेना ने इन्हें जब्त किया था।

दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज तैयार

चीन के गुआंग्शी जुआंग स्वायत्त क्षेत्र के तियान काउंटी में ये लोंगटान ब्रिज बनकर तैयार है। यह दुनिया का सबसे लम्बा स्पैन आर्च ब्रिज है। इसका मुख्य स्पैन 600 मीटर लम्बा है। इससे पहले यह रिकॉर्ड चीन के ही पिंग्नान थर्ड ब्रिज के नाम था, जिसका आर्च स्पैन 575 मीटर लम्बा है।

गुजरात का गरबा यूनेस्को की विरासत सूची में शामिल

गुजरात के प्रसिद्ध पारम्परिक लोक नृत्य गरबा को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आइसीएच) सूची में शामिल किया गया है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की ओर से बोत्सवाना में आइसीएच के अन्तरराष्ट्रीय कन्वेंशन में इसकी घोषणा की गई।

देश की पहली महिला एडीसी

भारतीय वायुसेना की महिला अधिकारी स्क्वाड्रन लीडर मनीषा पाढ़ी को सशस्त्र बल में भारत की पहली महिला सहायक डी कैम्प के रूप में नियुक्त किया गया है। मनीषा देश की पहली महिला एडीसी बनी हैं। उन्हें मिजोरम के राज्यपाल डॉ. हरिबाबू कंभमपति ने एडीसी नियुक्त किया है।

कृषा : संस्कृत श्लोक में प्रवीण

टोडारायसिंह क्षेत्र स्थित भासू गाँव निवासी 7 साल की कृषा वैष्णव ने संस्कृत में आदित्य हृदय स्तोत्र के 31 श्लोकों को महज 2 मिनट 18 सेकंड में पढ़कर इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करवाया है। कृष्णा जब चार साल की थी, तब उसने अपनी आवाज में शिव तांडव स्तोत्र, महिषासुर मर्दिनी, हरी स्तोत्रम और राम कथा के म्यूजिकल एलबम बनाए थे।

बाइक के बेकार टायरों से बना दिया किंगकॉन्ग स्टैच्यू

कंबोडिया के कांडल शहर में कलाकार मीन तिथफैप ने साइकिल और बाइक के बेकार टायरों से किंगकॉन्ग का स्टैच्यू तैयार कर दिया है। उन्होंने इसे अपने दो सहयोगियों के साथ मिलकर तैयार किया है। कलाकार मीन पहले भी इस तरह के अनोखे और कलात्मक स्टैच्यू तैयार करते रहे हैं।

Science of Living

Will-Power

Jeevan Vigyan

Q. A boy easily lifts a heavy bag. Why?

A. Because he has a strong body.

Q. Another boy cannot lift the similar bag easily. Why?

A. Because he has a weak body.

Q. A boy easily says what he wants to say. Why?

A. Because he has a strong power of speech.

Q. Another boy finds it difficult to say what he wants to say. Why?

A. Because he has a weak power of speech.

Q. A boy remains firm in his resolve. Why?

A. Because he has power of resoluteness.

Q. Another boy becomes shaky in his resolve. Why?

A. Because he has no power of resoluteness.

Benefits of will-power

1. We can increase the strength of the body by will-power.
2. We can increase the power of speech by will-power.
3. We can increase the power of mind by will-power and determination.

Let us resolve in this manner

- Stand straight or sit in 'Sukhasan'.
- 'Keep the neck and back straight.
- Close the eyes gently.

After breathing in, resolve firmly and gently as follows :

- I am strong. Strength is increasing all over my body.
- I am strong. My speech is becoming powerful.
- I am strong. My mind is becoming cool and strong.

हम नव वर्ष 1 जनवरी को ही क्यों मनाते हैं?

बच्चो! हम हर साल नव वर्ष मनाते हैं लेकिन क्या तुमने कभी यह बात समझने की कोशिश की है कि हम नव वर्ष क्यों मनाते हैं? या पहला नव वर्ष कब मनाया गया अर्थात् इसकी शुरूआत कब हुई?

अगर हम इंटरनेट पर सर्च करते हैं तो हमें पता चलता है कि रोमन कैलेंडर का पहला नव वर्ष ईसा से 2000 वर्ष पहले मेसोपोटामिया में मनाना प्रारम्भ हुआ। परन्तु यह गलत है। क्योंकि यह नई साल का उत्सव नहीं था बल्कि यह उत्सव एक फसल को लेकर था। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि पहले नया साल 1 जनवरी को नहीं मनाया जाता था। नया साल मनाने की शरुआत 15 अक्टूबर 1582 से शुरू हुई थी इससे पहले नया साल कभी 25 मार्च को तो कभी 25 दिसम्बर को मनाया जाता था।

ईसा से 700 साल पहले रोम में राजा नुमापोपलिस का शासन था। उन्होंने रोमन कैलेंडर या ग्रेगरी कैलेंडर जो सिर्फ 10 महीने या 304 दिन का था, में जेनेरियस और फेबरियस 2 महीने जोड़कर उसे 360 दिन का कर दिया गया। 10 महीने का यह साल मार्च से शुरू होता था। जेनेरियस नाम रोम की देवी जैनुस के नाम पर रखा गया था जिन्हें उद्घाटन की देवी भी कहा जाता था। रोम के लोगों में रिवाज था कि कोई भी नया काम करने से पहले वह अपनी देवी की पूजा किया करते थे और नाच गाना किया करते थे। रोम के निवासियों को लगता था कि देवी की पूजा व नाचने गाने से हमारी देवी खुश होती है। हुआ यह कि जब इनका उत्सव आया तभी यह जेनेरियस महीना भी।

फिर क्या था तभी से पहला महीना जनवरी का मनाया जाने लगा। लेकिन लोगों का यह कहना है कि नव वर्ष ईसाइयों का त्योहार है जबकि यह घटना ईसा से 700 वर्ष पूर्व की है जब ईसा ही नहीं थे तो ईसाई कहाँ थे? यह उत्सव तो पैगंस द्वारा मनाया जाता था। क्रिश्चियन तो 1582 तक 1 जनवरी सरकमसिसन ऑफ क्राइस्ट को मनाते थे।

जुलियस सीजर ने खगोलविदों से बात करके यह पता लगाया कि पृथ्वी 365 दिन और 6 घंटे में सूर्य की परिक्रमा करती है। इसको देखते हुए जूलियन कैलेंडर में साल में 365 दिन कर दिए। पोप ग्रेगरी ने साल 1582 में लीप ईयर को लेकर गलती खोजी थी। उस समय के मशहूर धर्मगुरु सेंड बीड ने बताया कि 1 साल में 365 दिन 5 घंटे और 46 सेकंड होते हैं। इसके बाद रोमन कैलेंडर में बदलाव किया गया और नया कैलेंडर बनाया गया। तब से ही 1 जनवरी को नया साल मनाया जाने लगा।

लक्ष्मी कानोड़िया
खुर्जा (उत्तर प्रदेश)

किसका चारा?
चित्रकथा-
भेड़िए ने चट्टानी पहाड़ी पर बकरी को चरते देखा, उसके लिए चट्टानी पहाड़ी पर चढ़ना मुश्किल था. वह बकरी से बोला-
अरे बकरी...
...ऊपर कहां सूखी घास खा रही है...
नीचे आकर देख, यहां जमीन भी समतल है और घास भी बहुत मीठी, यहां तेरे लिए खूब चारा है.
बकरी ने भेड़िए की तरफ देखा फिर हंसकर बोली-
मैं जानती हूं भेड़िए, तू मुझे नीचे क्यों बुला रहा है...
...तुझे मेरे नहीं, अपने चारे की चिंता है...
संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

किड्स कॉर्नर

Word search

Find out one action word in each grid. Then write it in the box given below each grid.

1

A	W	K	L
B	A	S	Q
C	L	O	P
D	K	N	M

2

B	N	S	P
K	M	K	L
B	K	L	A
W	A	M	Y

3

B	C	O	J
L	R	R	K
M	Y	O	N
N	K	K	L

4

R	K	S	R
E	P	J	M
A	U	N	J
D	A	C	D

- वेणु वरियाथ

Answer: 1) WALK 2) PLAY 3) CRY 4) READ

जन्मदिन की बधाई

13 जनवरी

आयशा लोहिया
राजसमन्द

29 जनवरी

भूमि मेघवाल
निम्बाहेड़ा

30 जनवरी

महक प्रज्ञा बोथरा
नई दिल्ली

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai • Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुविभा
अणुव्रत अमृत महोत्सव के गौरवशाली अवसर पर
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
की प्रस्तुति
अणुव्रत अमृत महोत्सव
अणुव्रत गीत महासंगान
श्रेष्ठ भारत का शंखनाद
18 जनवरी 2024
एक विश्व
एक स्वर
मानव धर्म मुखर
आपके विद्यालय में इस आयोजन हेतु सम्पर्क करें–
अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत
97372 80171 ▪ 93746 13000
98254 04433 ▪ 93747 26946

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

“अगर जीवन में संघर्ष न रहे, किसी भी भय का सामना न करना पड़े, तो जीवन का आधा स्वाद ही समाप्त हो जाता है। अपनी ताकत पर भरोसा करो, उधार की ताकत तुम्हारे लिए घातक है। अगर कभी झुकने की नौबत आ जाए तब भी वीरों की तरह झुकना। आशा की कोई न कोई किरण होती है, जो हमें कभी जीवन से भटकने नहीं देती।”

सुभाष चन्द्र बोस

जन्म : 23 जनवरी 1897

निधन : 18 अगस्त 1945

उड़ीसा के कटक शहर में जन्में सुभाष चन्द्र बोस ने कोलकाता के प्रैसिडेन्सी कॉलेज और इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की। 1920 में सुभाष चंद्र बोस इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा में शामिल हुए और चौथा स्थान प्राप्त किया। काँग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे सुभाष चन्द्र बोस भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी क्रांतिकारी नेता थे। उन्होंने जापान के सहयोग से `आजाद हिन्द फौज' का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया `जय हिन्द' का नारा और `तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूँगा ' का घोष अत्यधिक प्रचलन में आया।